२८. और उस के बाद हम ने उसकी जाति पर आकाश से कोई सेना नहीं नाज़िल की, और न इस तरह हम नाज़िल करते हैं।

وَمَآ أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِۦ مِنۢ بَعْدِهِۦ مِن جُندٍ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ ﴿28﴾

२९. वह तो केवल एक जोरदार चीख़ थी कि अचानक वह सब के सब बुझ-बुझा गये।

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَٰمِدُونَ ﴿29﴾

३०. (ऐसे) बन्दों पर अफ़सोस! कभी भी कोई रसूल उन के पास नहीं आया जिसका मज़ाक उन्होंने न उड़ाया हो।

يَٰحَسْرَةً عَلَى ٱلْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿30﴾

३१. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले बहुत से समुदायों को हम ने हलाक कर दिया कि वे उनकी तरफ़[1] नहीं लौटेंगे।

أَلَمْ يَرَوْا۟ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ ٱلْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿31﴾

३२. और नहीं है कोई समूह लेकिन यह कि वह जमा होकर हमारे सामने पेश किया जायेगा।

وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿32﴾

३३. और उन के लिए एक निशानी मुर्दा (सूखी) धरती है जिसको हम ने जिन्दा कर दिया और उस से अन्न (दाना) निकाल दिया जिस में से वे खाते हैं।

وَءَايَةٌ لَّهُمُ ٱلْأَرْضُ ٱلْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَٰهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿33﴾

३४. और हम ने उस में खजूरों के और अंगूरों के बाग़ात पैदा कर दिये,[2] और जिन में हम ने चश्मे भी जारी कर दिये हैं।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّٰتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَٰبٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ ٱلْعُيُونِ ﴿34﴾

---

[1] इस में मक्का के रहने वालों के लिये चेतावनी (तंबीह) है कि रिसालत को झुठलाने की वजह से पिछली जातियों की तबाही हुई, यह भी तबाह हो सकते हैं।

[2] यानी बेजान धरती को जिन्दा करके हम ने खाने के लिये केवल अन्न ही नहीं उगाये बल्कि मज़ा के लिए कई तरह के फल भी ज़्यादा तादाद से पैदा करते हैं, यहाँ सिर्फ़ दो फलों की चर्चा इसलिए की गई कि यह बहुत फ़ायदेमंद है और अरबों को रूचिकर (मरग़ूब) भी, और इनकी उपज (पैदाइश) भी अरब में ज़्यादा है, फिर अन्न की चर्चा पहले की, क्योंकि उसकी उपज भी ज़्यादा है और खाद्यान्न (गिज़ा) होने की वजह से उसका फ़ायदा भी मुत्तफ़क़। जब तक इन्सान रोटी, चावल वग़ैरा खाद्यान्न से अपना पेट नहीं भरता सिर्फ़ फल से उसकी खाने की ज़रूरत पूरी नहीं होती।

لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ (35)

३५. ताकि (लोग) इस के फल खायें,[1] और उन के हाथों ने उसको नहीं बनाया। फिर क्यों शुक्रिया अदा नहीं करते।

سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ (36)

३६. वह पाक जात है जिस ने हर चीज के जोड़े पैदा किये, चाहे वह धरती से उगायी हुई चीजें हों, चाहे ख़ुद उनकी अपनी जाति (वजूद) हो, चाहे वे (चीजें) हों जिन्हें ये जानते भी नहीं।[2]

وَآيَةٌ لَّهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ (37)

३७. और उन के लिए एक निशानी रात है, जिस से हम दिन को खींच देते हैं तो अचानक वे अंधेरे में रह जाते हैं।

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ (38)

३८. और सूरज के लिए जो मुक़र्रर (निर्धारित) रास्ते है वह उसी पर चलता रहता है।[3] यह है मुक़र्रर किया हुआ जबरदस्त आलिम (ज्ञानी) (अल्लाह तआला) का।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ (39)

३९. और चाँद की हम ने मंजिलें मुक़र्रर कर रखी हैं,[4] यहाँ तक कि वह घूम फिर कर पुरानी डाली की तरह हो जाती है।

---

[1] यानी कुछ जगह पर चश्मा (स्रोत) भी जारी करते हैं जिस के पानी से पैदा होने वाले फल लोग खायें।

[2] यानी इन्सानों के बराबर धरती की हर पैदावार में हम ने नर-मादा दोनों बनाया है, इन के सिवाय आकाशों में और धरती की गहराईयों में भी जो चीजें तुम से छिपी हैं, जिनका इल्म तुम नहीं रखते, उन में भी जोड़ा (नर-मादा) की यह व्यवस्था (एहतेमाम) हम ने रखी है। इसलिए सभी मख़लूक़ जोड़ा-जोड़ा है, वनस्पति (नबातात) में भी नर-मादे की व्यवस्था है यहाँ तक कि दुनियावी जीवन परलोक (आख़िरत) के जीवन के लिये जोड़ा की तरह है और यह आख़िरत के जीवन के लिए एक अक़्ली दलील भी है, केवल एक अल्लाह है जो मख़लूक़ की इस विशेषता (ख़ुसूसियत) और दूसरी सभी कमियों से पाक है, वह अकेला है जोड़ा नहीं।

[3] यानी अपनी धुरी (मदार) पर चलता रहता है जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित (मुक़र्रर) किया है, इसी से अपनी यात्रा शुरू करता और वहीं ख़त्म करता है, इससे इधर-उधर नहीं होता कि किसी ग्रह से टकरा जाये।

[4] चाँद की २८ मंजिलें हैं, नित्य दिन एक मंजिल पार करता है, फिर दो रात ग़ायब रहकर तीसरी रात निकलता है।

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿40﴾

४०. न सूरज के वश में है कि चांद को पकड़े और न रात दिन से आगे बढ़ जाने वाली है, और सब के सब आकाश में तैरते फिरते हैं।

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿41﴾

४१. और उन के लिए एक निशानी (यह भी) है कि हम ने उनकी औलाद को भरी हुई नाव में सवार किया।

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿42﴾

४२. और इन के लिए उसी जैसी दूसरी चीज़ें पैदा कीं जिन पर ये सवार होते हैं।[1]

وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿43﴾

४३. और अगर हम चाहते तो उन्हें डुबा देते फिर न कोई उनका मदद करने वाला होता और न बचाये जाते।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿44﴾

४४. लेकिन हम अपनी तरफ़ से दया (रहमत) करते हैं और एक मुद्दत तक के लिए उन्हें फ़ायेदा दे रहे हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿45﴾

४५. और उन से जब (कभी) कहा जाता है कि अगले-पिछले (पापों) से बचो ताकि तुम पर दया (रहम) की जाये।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿46﴾

४६. और उन के पास उन के रब की तरफ़ से कोई निशानी ऐसी नहीं आती जिस से ये मुँह न फेरते हों।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿47﴾

४७. और उनसे जब कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) के दिये हुए में से कुछ ख़र्च करो तो ये काफ़िर ईमानवालों को जवाब देते हैं कि हम उन्हें क्यों खिलायें जिन्हें अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो ख़ुद खिला-पिला देता? तुम तो हो ही खुली गुमराही में।

---

[1] इस से मुराद ऐसी सवारियाँ हैं जो नाव की तरह इंसान और तिजारती सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती हैं, इस में क़यामत (प्रलय) तक पैदा होने वाली चीज़ें आ गईं, जैसे हवाई जहाज़, पानी का जहाज़, रेलें, बसें, कारें और दूसरे सवारी के साधन (ज़रिया)।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ (48)

४८. और वह कहते हैं कि यह वादा (क़यामत की धमकी) कब आयेगा, सच्चे हो तो बताओ।

مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ (49)

४९. उन्हें केवल एक जोरदार चीख़ का इंतेज़ार है जो उन्हें आ पकड़ेगी, और ये आपसी लड़ाई-झगड़े में ही होंगे।[1]

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ (50)

५०. उस समय ये न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने परिवार की तरफ़ लौट सकेंगे।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ (51)

५१. और नरसिंघा (सूर) के फूँके जाते ही सब के सब अपनी क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ (तेज़ चाल) से चलने लगेंगे।

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ (52)

५२. कहेंगे कि हाय-हाय हमें हमारी आरामगाहों से किस ने उठा दिया,[2] यही है जिसका वादा दयालु (रहमान) ने किया था और रसूलों ने सच-सच कह दिया था।

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ (53)

५३. यह नहीं है लेकिन एक तेज़ आवाज़ कि अचानक सारे के सारे जमा होकर हमारे सामने हाज़िर कर दिये जायेंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (54)

५४. तो आज किसी इंसान पर ज़रा भी ज़ुल्म न किया जायेगा, और तुम्हें नहीं बदला दिया जायेगा लेकिन उन्हीं कामों का जो तुम किया करते थे।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ (55)

५५. बेशक जन्नत वाले लोग आज के दिन अपने (मनोरंजन) कामों में व्यस्त (मशग़ूल)

---

[1] यानी लोग बाज़ारों में क्रय-विक्रय (ख़रीद-फ़रोख़्त) और वाद-विवाद में व्यस्त (मसग़ूल) होंगे कि अचानक नरसिंघा (सूर) फूँक दिया जायेगा और क़यामत हो जायेगी, यह पहली फूँक होगी, इस को نفخہ فزع (घबराहट की फूँक) भी कहते हैं।

[2] क़ब्र को आरामगाह कहने से मुराद यह नहीं कि क़ब्र में उनको सज़ा नहीं होगी, बल्कि उस के बाद जो भयानक दृश्य (मंज़र) और अज़ाब की कठोरता को देखेंगे उसकी तुलना (मुक़ाबिल) में उन्हें क़ब्र का जीवन एक ख़्वाब ही प्रतीत (महसूस) होगा।

ख़ुश और आनन्दित (मसरूर) हैं।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ (56)

५६. वह और उनकी पत्नियाँ छाओं में मसहरियों पर तकिया लगाये बैठे होंगे।

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدَّعُونَ (57)

५७. उन के लिए जन्नत में हर तरह के मेवे होंगे और दूसरे भी जो कुछ वे माँगेंगे।

سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبٍّ رَحِيمٍ (58)

५८. रहम करने वाले रब की तरफ़ से उनको 'सलाम' कहा जायेगा।[1]

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ (59)

५९. और हे पापियो (मुजरिमो)! आज तुम अलग हो जाओ।

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ (60)

६०. हे आदम की औलाद! क्या मैंने तुम से वादा नहीं लिया था कि तुम शैतान की इबादत न करना, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَأَنِ اعْبُدُونِي هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ (61)

६१. और मेरी ही इबादत (उपासना) करना, सीधा रास्ता यही है।

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ (62)

६२. और शैतान ने तो तुम में से ज़्यादातर गिरोहों को बहका दिया, क्या तुम अक़्ल नहीं रखते।[2]

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ (63)

६३. यही वह नरक है जिसका तुम्हें वादा किया जाता था।

اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ (64)

६४. अपने कुफ़्र का बदला हासिल करने के लिए आज उस में दाख़िल हो जाओ।

---

[1] अल्लाह का यह सलाम फ़रिश्ते जन्नत वालों को पहुँचायेंगे, कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआला (परमेश्वर) ख़ुद सलाम कहेगा।

[2] यानी इतनी भी अक़्ल तुम में नहीं कि शैतान तुम्हारा दुश्मन है, उसकी बात नहीं माननी चाहिए, और मैं तुम्हारा रब हूँ, मैं ही तुम्हें रोज़ी देता हूँ और मैं ही तुम्हारी रात-दिन रक्षा (हिफ़ाज़त) करता हूँ, इसलिए तुम्हें मेरा हुक्म मानना चाहिए, तुम शैतान की दुश्मनी और मेरी इबादत के हक़ को न समझ कर बेअक़्ली और बेवक़ूफ़ी का इज़हार कर रहे हो।

६५. हम आज के दिन उन के मुंह पर मुद्रायें (मोहरें) लगा देंगे और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पैर गवाही देंगे, उन के कामों की जो वे करते थे ।[1]

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿65﴾

६६. और अगर हम चाहते तो उन की आंखें अंधी कर देते, फिर ये रास्ते की तरफ़ दौड़ते भागते लेकिन उन्हें कैसे दिखाई देता?

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿66﴾

६७. और अगर हम चाहते तो उन की जगह ही पर उन के मुंह विकृत (मसख़) कर देते, फिर न वे चल-फिर सकते और न लौट सकते ।

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿67﴾

६८. और जिसे हम बूढ़ा करते हैं उसे जन्म के समय की हालत की तरफ़ दोबारा लौटा देते हैं, क्या फिर भी वह नहीं समझते?

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ۗ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿68﴾

६९. और न तो हम ने इस पैग़म्बर को शायरी सिखाया और न यह इस के लायक़ है, यह तो केवल शिक्षा और वाज़ेह क़ुरआन है ।[2]

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿69﴾

---

[1] यह मुद्रा (मोहर) लगाने की जरूरत इसलिए होगी कि शुरू में मुश्रेकीन (द्वैतवादी) क़यामत के दिन भी झूठ बोलेंगे और कहेंगे ।

﴿وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ﴾

"अल्लाह की क़सम! जो हमारा रब है, हम मिश्रणवादी (मुश्रिक) नहीं थे ।" (अल-अन्आम-२३)

तो अल्लाह उन के मुंह पर मोहर लगा देगा, जिस से वह तो ख़ुद बोलने की ताक़त से वंचित (महरूम) हो जायेंगे । हाँ, अल्लाह तआला (परमेश्वर) इंसानी अंगों को बोलने की ताक़त देगा, हाथ बोलेंगे कि हम से इस ने फ़्लां-फ़्लां काम लिया था और पांव गवाही देंगे, यूं मानो इक़रार और गवाही दोनों समस्याओं (मसलों) का हल हो जायेगा । इस के सिवाय बोलने वाले के विपरीत न बोलने वाली चीज़ों का गवाही देना दलील में ज़्यादा असरअंदाज़ है कि इस में एक चमत्कारी (मोजिज़ाना) हालत पायी जाती है (फ़तहुल क़दीर) । इस विषय को अहादीस में भी बयान किया गया है । (देखिये सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद)

[2] मक्का के मूर्तिपूजक नबी ﷺ के बारे में अलग-अलग बातें कहते रहते थे, उन में एक बात यह भी थी कि आप कवि (शायर) हैं और यह पाक क़ुरआन आप की कविता की तुकबन्दी है । अल्लाह ने उसका खण्डन (तरदीद) किया कि आप कवि (शायर) हैं न पाक क़ुरआन कविता का

लِّيُنذِرَ مَن كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَٰفِرِينَ ⑦⓪

७०. ताकि वह हर उस इंसान को सावधान (आगाह) कर दे जो ज़िन्दा है और काफ़िरों पर सच (तर्क) सावित हो जाये।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَٰمًا فَهُمْ لَهَا مَٰلِكُونَ ⑦①

७१. क्या वह नहीं देखते कि हम ने अपने हाथों बनायी हुई चीज़ों में से उन के लिए चौपाये (पशु भी) पैदा कर दिये, जिन के ये मालिक हो गये हैं।[1]

وَذَلَّلْنَٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ⑦②

७२. और उन (जानवरों) को हम ने उन के वश में कर दिया है[2] जिन में से कुछ तो उन की सवारियाँ हैं और कुछ (का गोश्त) खाते हैं।

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَٰفِعُ وَمَشَارِبُ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ⑦③

७३. और उन्हें उन से दूसरे भी बहुत से फ़ायदे हैं[3] और पीनें की चीज़ें। क्या फिर (भी) ये शुक्रिया अदा नहीं करते?

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ⑦④

७४. और वह अल्लाह के सिवाय दूसरों को माबूद बनाते हैं कि उनकी मदद की जाये।

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ⑦⑤

७५. (यद्यपि) उन में उनकी मदद की ताक़त नहीं फिर भी (मूर्तिपूजक) उनकी मौजूद सेना हैं।

संग्रह (मजमुआ) है, बल्कि यह सिर्फ़ नसीहत और शिक्षा है। शायरी में आम तौर से मुबालगा और सिर्फ़ कल्पनाओं (ख़्यालात) की विचित्रता होती है, यूँ मानो वह झूठ पर आधारित (मबनी) होती है, इस के सिवा शायर सिर्फ़ बात के बहादुर होते हैं काम के नहीं। इसलिए अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने फ़रमाया कि हम ने अपने पैग़म्बर को शायरी नहीं सिखाई न कविता की उसकी तरफ़ प्रकाशना (वह्यी) की।

[1] यानी जैसे चाहते हैं उन से काम लेते हैं। हम अगर उन में जंगलीपन रख देते (जैसाकि कुछ जानवरों में है) वह उन से दूर भागते और उन की मिल्कियत और बस में न आते।

[2] यानी इन जानवरों से वह जैसा चाहते हैं फ़ायेदा हासिल करते हैं वे इंकार नहीं करते, यहाँ तक की उन्हें क़त्ल कर देते हैं और छोटे बच्चे भी उन्हें खींचते फिरते हैं।

[3] यानी सवारी और खाने के सिवाय भी बहुत से फ़ायदे हासिल किये जाते हैं, जैसे उन के ऊन और बालों से कई चीज़ें बनती हैं। उनकी चर्बी (वसा) से तेल मिलता है और यह भारवाहन और खेती-बाड़ी के भी काम आते हैं।

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿76﴾

७६. इसलिए आप को उनकी बात ग़मगीन न करे, हम उन की छिपी और ज़ाहिर सभी बातों को (अच्छी तरह) जानते हैं।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ﴿77﴾

७७. क्या इन्सान को इतना भी इल्म नहीं कि हम ने उसे वीर्य (नुतफ़ा) से पैदा किया है? फिर भी यह खुला झगड़ालू बन बैठा।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿78﴾

७८. और उस ने हमारे लिये मिसाल बयान की और अपनी (मूल) पैदाईश को भूल गया, कहने लगा कि इन सड़ी-गली हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है।

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿79﴾

७९. कह दीजिए कि उन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उन्हें पहली बार पैदा किया,[1] जो सब प्रकार (तरह) की पैदाईश को अच्छी तरह जानने वाला है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ﴿80﴾

८०. वही है जिस ने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग पैदा कर दी जिस से तुम आग सुलगाते हो।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿81﴾

८१. जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है, क्या वह इन जैसों के पैदा करने पर क़ादिर नहीं? यक़ीनन क़ादिर है और वही तो पैदा करने वाला जानने वाला है।

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿82﴾

८२. जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है उसे इतना कह देना (बस) है कि हो जा, वह फ़ौरन हो जाती है।

[1] यानी जो अल्लाह एक हक़ीर वीर्य (नुतफ़ा) से इन्सान को पैदा करता है, वह उसे दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं है? उस के मुर्दों को ज़िन्दा करने की एक कहानी हदीस में बयान है कि एक इंसान ने मौत के वक़्त यह वसीयत की कि मरने के बाद उसे जलाकर आधी राख समुद्र में और आधी राख तेज़ हवा के दिन ज़मीन में उड़ा दी जाये। अल्लाह ने सभी राख जमा करके उसे ज़िन्दगी अता किया और उस से पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया? उस ने कहा तेरे डर से, अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया)

فَسُبْحٰنَ الَّذِىْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَىْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿83﴾

८३. तो पाक है वह अल्लाह जिस के हाथ में हर चीज का मुल्क है और जिसकी तरफ़ तुम सब लौटाये जाओगे ।[1]

سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ

सूरतुस्साफ़्फ़ात-३७

सूरः साफ़्फ़ात मक्का में नाज़िल हुई, इस में एक सौ बयासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿1﴾

१. क़सम है पंक्तिवद्ध (सफ़बस्ता) होने वाले (फ़रिश्तों) की।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿2﴾

२. फिर पूरी तरह से डाँटने वालों की।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿3﴾

३. फिर अल्लाह का पाठ करने वालों की।

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿4﴾

४. वेशक तुम सब का पूज्य (माबूद) एक ही है।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿5﴾

५. आकाशों और धरती और उन के वीच की सभी चीज़ों और सारी पूर्वी दिशाओं का वही रब है।

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ اِلْكَوَاكِبِ ﴿6﴾

६. हमने संसार के (निकट) आकाश को सितारों से सुशोभित (सजाया) और मुज़य्यन किया है।

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿7﴾

७. और (हम ने ही उसकी) सुरक्षा (हिफ़ाज़त) की है हर सरकश शैतान से ।[2]

---

[1] यानी यह नहीं होगा कि मिट्टी में घुल-मिलकर तुम्हारा वजूद सदा के लिये ख़त्म हो जाये। नहीं, बल्कि फिर ज़िन्दगी अता की जायेगी, यह भी नहीं होगा कि तुम भाग कर किसी दूसरे के पास पनाह लो, तुम्हें हर हालत में अल्लाह ही के दरवार में हाज़िर होना होगा, जहाँ वह अमल के ऐतवार से अच्छा-बुरा बदला देगा।

[2] यानी दुनिया के आकाश पर, ज़ीनत के अलावा तारों का दूसरा मक़सद यह है कि सरकश शैतानों से सुरक्षा (हिफ़ाज़त) हो, तो जव शैतान आकाश पर कोई बात सुनने के लिए जाते हैं, तो तारे उन पर टूट कर गिरते हैं, जिस से आम तौर से शैतान जल जाते हैं, जैसाकि आगे की

لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ جَانِبٍ ⑧

८. उच्च संसार (आलमे बाला) के फ़रिश्तों (की बातों) को सुनने के लिए वे कान भी नहीं लगा सकते बल्कि चारों तरफ़ से वे मारे जाते हैं।

دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ⑨

९. भगाने के लिए और उन के लिए स्थाई (मुस्तक़िल) अज़ाब है।

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ⑩

१०. लेकिन जो एक-आध बात उचक ले भागे तो (तुरन्त ही) उसके पीछे दहकता हुआ शोला लग जाता है।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّن طِينٍ لَّازِبٍ ⑪

११. इन काफ़िरों से पूछो तो कि उनका पैदा करना ज़्यादा कठिन है या जिन्हें हम ने पैदा किया है? हम ने तो इंसानों को लस्सेदार मिट्टी से पैदा किया है।

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ⑫

१२. बल्कि तू ताज्जुब कर रहा है, और ये मज़ाक कर रहे हैं।

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ⑬

१३. और जब उन्हें नसीहत की जाती है तो ये नहीं मानते।

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ⑭

१४. और जब किसी मोजिज़े को देखते हैं तो मज़ाक उड़ाते हैं।

وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑮

१५. और कहते हैं कि यह तो पूरी तरह से खुला जादू ही है।

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ⑯

१६. क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे फिर क्या (हक़ीक़त में) हम ज़िन्दा किये जायेंगे?

أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ⑰

१७. या हम से पहले के हमारे बाप-दादा भी?

आयत और हदीसों से साफ़ है। तारों का एक तीसरा मक़सद (उद्देश्य) रात के अंधेरे में रास्ता दिखाना भी है, जैसाकि क़ुरआन में दूसरी जगह पर बयान किया गया है, इन तीनों मक़सदों के अलावा तारों का कोई और मक़सद नहीं बताया गया है।

१८. (आप) जवाब दीजिए कि हाँ, और तुम ज़लील (भी) होगे।

قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ (18)

१९. वह तो केवल एक ज़ोरदार डाँट होगी कि अचानक ये देखने लगेंगे।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ (19)

२०. और कहेंगे कि हाय रे हमारा विनाश, (हलाकत) यही बदले का दिन है।

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ (20)

२१. यही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते रहे।[1]

هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ (21)

२२. ज़ालिमों को और उन के साथियों को और जिन-जिन की वे (अल्लाह के सिवाय इबादत करते थे।

احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ (22)

२३. (उन सब को) जमा करके उन्हें नरक का रास्ता दिखा दो।

مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ (23)

२४. और उन्हें ठहरा लो[2] (इसलिए) कि उन से ज़रूरी सवाल किये जाने वाले हैं।

وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ (24)

२५. क्या वजह है कि (इस समय) तुम एक-दूसरे की मदद नहीं करते।

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ (25)

२६. बल्कि वे (सब के सब) आज आज्ञाकारी (फ़रमाँबरदार) बन गये।

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ (26)

२७. और वे एक-दूसरे को सम्बोधित (मुख़ातिब) करके सवाल-जवाब करने लगेंगे।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ (27)

२८. कहेंगे कि तुम तो हमारे पास हमारी दायीं

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ (28)

[1] وَيْل (वैल) लफ़्ज़ बरबादी के मौक़ा पर बोला जाता है, यानी अज़ाब को देखने के बाद उन्हें अपनी तबाही खुले तौर से दिख रही होगी, और इस से मुराद शर्म का प्रदर्शन (इज़हार) और अपने गुनाहों का इक़रार (स्वीकार) है, लेकिन इस समय नदामत और क़ुबूल का कोई फ़ायेदा न होगा, इसलिए इस के जवाब में फ़रिश्ते और ईमानवाले कहेंगे कि यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम मानते नहीं थे, यह भी मुमकिन है कि आपस में एक-दूसरे से कहेंगे।

[2] यह हुक्म नरक में ले जाने से पहले होगा, क्योंकि वह हिसाब के बाद ही नरक में जायेंगे।

तरफ़ से आते थे।

قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿29﴾

२९. वह जवाब देंगे कि नहीं, बल्कि तुम ही ईमान वाले न थे।[1]

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿30﴾

३०. और कुछ हमारा जोर तुम पर था (ही) नहीं, बल्कि तुम लोग (ख़ुद) सरकश लोग थे।[2]

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿31﴾

३१. अब तो हम (सब) पर हमारे रब की यह बात साबित हो चुकी कि हम (अज़ाब का) मज़ा चखने वाले हैं।

فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿32﴾

३२. तो हम ने तुम्हें गुमराह किया, हम तो ख़ुद भी गुमराही में थे।

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿33﴾

३३. तो अब आज के दिन (सब के सब) अज़ाब में हिस्सेदार हैं।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿34﴾

३४. हम पापियों के साथ इसी तरह किया करते हैं।

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿35﴾

३५. ये वे (लोग) हैं कि जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य (माबूद) नहीं, तो यह घमंड करते थे।

وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿36﴾

३६. और कहते थे कि क्या हम अपने देवताओं को एक दीवाने शायर की बात पर छोड़ दें।

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿37﴾

३७. (नहीं, नहीं) बल्कि नबी तो हक़ (सच्चा दीन) लाये हैं और सभी रसूलों को सच्चा जानते हैं।

إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿38﴾

३८. बेशक तुम कष्टदायी अज़ाबों (के मज़े) चखने वाले हो।

---

[1] अगुवा कहेंगे कि ईमान तुम अपनी मर्ज़ी से नहीं लाये और आज इल्ज़ाम हमें दे रहे हो?

[2] अगुवा और पैरोकारों का यह आपसी झगड़ा पाक क़ुरआन के कई जगहों में चर्चित है। उन की यह निन्दा (मलामत) महशर के मैदान में होगी और नरक में जाने के बाद नरक में भी, देखो अल-मोमिन-४७,४८, सूरः सबा-३१,३२, अल-आराफ़-३८, ३९ आदि आयतें।

३९. और तुम्हें उसी का बदला दिया जायेगा जो तुम करते थे ।[1]

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿39﴾

४०. लेकिन अल्लाह (तआला) के मुख़्लिस बन्दे।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿40﴾

४१. उन्हीं के लिए मुक़र्रर रोज़ी है ।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ ﴿41﴾

४२. (हर तरह के) मेवे और वह बाइज़्ज़त और आदरणीय (मोहतरम) होंगे ।

فَوَاكِهُ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿42﴾

४३. सुखों वाली जन्नतों में ।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿43﴾

४४. आसनों पर एक-दूसरे के सामने बैठे होंगे।

عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿44﴾

४५. जारी शराब के प्यालों का उन पर दौर चल रहा होगा ।[2]

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ﴿45﴾

४६. जो साफ सफेद और पीने में मज़ेदार होंगी।

بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ﴿46﴾

४७. न उस से सिर दर्द होगा और न उस के पीने से बहकें ।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿47﴾

४८. और उन के क़रीब नीची और बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें) होंगी ।

وَعِنْدَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿48﴾

४९. ऐसी जैसे छिपाये हुए अण्डे ।[3]

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَكْنُونٌ ﴿49﴾

[1] यह नरकवासियों से उस समय कहा जायेगा जब वह खड़े आपस में सवाल कर रहे होंगे, और साथ ही स्पष्ट (वाज़ेह) कर दिया जायेगा कि यह ज़ुल्म नहीं हमेशा इंसाफ़ है, क्योंकि सब तुम्हारे अपने करतूतों का बदला है ।

[2] كَأْس (कास) शराब भरे प्याले को और قدح (क़दह) ख़ाली प्याले को कहते हैं, مَعِين का मतलब है बहते चश्मे, मतलब यह है कि बहते चश्मे की तरह जन्नत में शराब हर समय मिलेगी ।

[3] यानी शुतुरमुर्ग़ के पंखों के नीचे छुपाये हुए हों, जिसकी वजह से वह हवा व गर्द व ग़ुबार से सुरक्षित (महफ़ूज़) हों, कहते हैं कि शुतुरमुर्ग़ के अंडे बड़े ख़ूबसूरत रंग के होते हैं, जो पीले सफेद होते हैं, और ऐसी रंग ख़ूबसूरती की दुनिया में सबसे अच्छा माना जाता है, इस बिना पर यह मिसाल केवल सफेदी में नहीं है बल्कि सुन्दर रंग और रूप और दृश्य (मंज़र) में है ।

५०. (जन्नत वाले) एक-दूसरे की तरफ़ मुंह करके पूछेंगे ।[1]

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿50﴾

५१. उन में से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक निकट (साथी) था ।

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿51﴾

५२. जो (मुझ से) कहा करता था कि क्या तू (क़यामत के आने का) यक़ीन करने वालों में से है ।

يَقُولُ أَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿52﴾

५३. क्या जब कि हम मरकर मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे क्या उस समय हम बदला दिये जाने वाले हैं?

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿53﴾

५४. कहेगा, तुम चाहते हो कि झांककर देख लो?

قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿54﴾

५५. झांकते ही उसे बीचों-बीच नरक में (जलता हुआ) देखेगा ।

فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿55﴾

५६. कहेगा: अल्लाह की क़सम! क़रीब था कि तू मुझे भी बरबाद कर दे ।

قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿56﴾

५७. और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं भी नरक में हाज़िर किये जाने वालों में होता।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿57﴾

.८. क्या (यह सही है कि) हम मरने वाले ही हीं?

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿58﴾

९. सिवाय पहले एक मौत के, और न हम ज़ाब दिये जाने वाले हैं ।

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿59﴾

६ . फिर तो (वाज़ेह बात है कि) यह बड़ी मयाबी है ।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿60﴾

ऐसी (कामयाबी) के लिए अमल करने वा ों को अमल करना चाहिए ।

لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴿61﴾

---

[1] ज त वाले जन्नत में एक-दूसरे के साथ बैठे हुए दुनिया के वाक़ेआत याद करेंगे और आपस में सु ंगे ।

६२. क्या यह मेहमानी अच्छी है या ज़क़्क़ूम (सेंढे) का पेड़?[1]	اَذٰلِكَ خَيۡرٌ نُّزُلًا اَمۡ شَجَرَةُ الزَّقُّوۡمِ ﴿62﴾
६३. जिसे हम ने ज़ालिमों के लिए कठिन परीक्षा बना रखी है।	اِنَّا جَعَلۡنٰهَا فِتۡنَةً لِّلظّٰلِمِيۡنَ ﴿63﴾
६४. बेशक वह पेड़ की जड़ से निकलता है।	اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخۡرُجُ فِيۡۤ اَصۡلِ الۡجَحِيۡمِ ﴿64﴾
६५. जिस के गुच्छे शैतानों के सिरों जैसे होते हैं।[2]	طَلۡعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوۡسُ الشَّيٰطِيۡنِ ﴿65﴾
६६. नरकवासी इसी पेड़ को खायेंगे और इसी से पेट भरेंगे।	فَاِنَّهُمۡ لَاٰكِلُوۡنَ مِنۡهَا فَمٰلِـُٔوۡنَ مِنۡهَا الۡبُطُوۡنَ ﴿66﴾
६७. फिर उस पर खौलता पानी पीना पड़ेगा।	ثُمَّ اِنَّ لَهُمۡ عَلَيۡهَا لَشَوۡبًا مِّنۡ حَمِيۡمٍ ﴿67﴾
६८. फिर उन सबका लौटना नरक की (आग के ढेर की) तरफ़ होगा।	ثُمَّ اِنَّ مَرۡجِعَهُمۡ لَا۟اِلَى الۡجَحِيۡمِ ﴿68﴾
६९. यक़ीन करो कि उन्होंने अपने बुज़ुर्गों को बहका हुआ पाया।	اِنَّهُمۡ اَلۡفَوۡا اٰبَآءَهُمۡ ضَآلِّيۡنَ ﴿69﴾
७०. और यह उन्हीं के पद-चिन्हों (निशाने क़दम) पर दौड़ते चलते रहे।	فَهُمۡ عَلٰۤى اٰثٰرِهِمۡ يُهۡرَعُوۡنَ ﴿70﴾
७१. और उन से पहले भी बहुत से अगले लोग बहक चुके हैं।	وَلَقَدۡ ضَلَّ قَبۡلَهُمۡ اَكۡثَرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿71﴾
७२. और जिन में हम ने सावधान करने वाले (रसूल) भेजे थे।	وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا فِيۡهِمۡ مُّنۡذِرِيۡنَ ﴿72﴾

[1] زقوم यह تزقم से बना है, जिसका मतलब बद्बूदार और घृणित (मकरूह) चीज़ निगलने के हैं। इस पेड़ का फल खाना भी नरकवासियों के लिए बड़ा नापसन्द होगा, क्योंकि यह बहुत बद्बूदार, कड़ुवा और बड़ा घृणित होगा। कुछ कहते हैं कि यह दुनियावी पेड़ों में से है, कुछ कहते हैं कि यह दुनियावी पेड़ नहीं और दुनियावालों के लिए नामालूम है (फ़तहुल क़दीर)। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा सही है, और यह वही पेड़ है जिसे उर्दू ज़ुबान में सेंध या थोहर कहते हैं।

[2] उसे बुराई और अशुभ (क़बाहत) में शैतान के सरों से तश्बीह दी, जैसे अच्छी चीज़ के बारे में कहते हैं कि मानो वह फ़रिश्ता है।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿73﴾

७३. अब तू देख ले कि जिन्हें धमकाया गया था उनका नतीजा कैसा हुआ।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿74﴾

७४. सिवाय अल्लाह के मुख़लिस बंदों के।

وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ﴿75﴾

७५. हमें नूह ने पुकारा तो देख लो कि हम कैसे अच्छे दुआ क़ुबूल करने वाले हैं।[1]

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿76﴾

७६. और हम ने उसे और उस के घर वालों को[2] उस सख़्त मुसीबत से बचा लिया।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿77﴾

७७. और उसकी औलाद को हम ने बाक़ी रहने वाली बना दिया।[3]

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿78﴾

७८. और हम ने उसकी (अपनी चर्चा) पिछलों में बाक़ी रखा।

سَلَامٌ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ﴿79﴾

७९. नूह (ﷺ) पर सारे जहाँ में सलाम (सुरक्षा) हो!

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿80﴾

८०. हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

---

[1] साढ़े नौ सौ साल दीन की तबलीग़ (प्रचार) के बावजूद भी जब समुदाय के ज़्यादातर लोगों ने उन्हें झुठलाया ही और उन्होंने अंदाज़ा कर लिया कि ईमान लाने की कोई आशा नहीं है तो अपने रब को पुकारा : ﴿فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ﴾ (अल-क़मर-१०) «अल्लाह मैं परास्त (मग़लूब) हूँ मेरी मदद कर» तो हम ने नूह की दुआ क़ुबूल की और उनकी जाति को तूफ़ान भेजकर नाश कर दिया।

[2] (अहल) أهل से मुराद नूह पर ईमान लाने वाले हैं, जिन में उन के परिवार के मोमिन (ईमानदार) सदस्य (अफ़राद) भी थे। कुछ मुफ़स्सिरों के क़रीब उनकी तादाद ८० थी जिन में उनकी पत्नी और एक पुत्र शामिल नहीं, जो ईमानवाले नहीं थे। वह भी तूफ़ान में डूब गये, كرب عظيم सख़्त मुसीबत से मुराद वही भारी बाढ़ है जिस में यह जाति डूब गई।

[3] ज़्यादातर मुफ़स्सिरों के क़ौल के ऐतबार से हज़रत नूह के तीन पुत्र थे। हाम, साम और याफ़िस, इन्हीं से बाद का इंसानी वंश चला, इसी वजह से नूह को दूसरा आदम भी कहा जाता है, यानी आदम की तरह उन के बाद यह मानव जाति के दूसरे परम पिता हैं। हाम के वंश से सूडान (पूरब से पश्चिम तक) यानी सिन्ध, भारत, नौब, जंज, हबशा, क़िब्त और बर्बर वग़ैरह हैं और यासिफ के वंश से सक़ालिबा, तुर्क, ख़ज़र, याजूज और माजूज वग़ैरह हैं। साम के वंश से अरब, फ़ारस, रूम, यहूद और इसाई हैं (फ़तहुल क़दीर)। والله أعلم

إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿81﴾

८१. वह हमारे ईमानदार बन्दों में से था।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا ٱلْءَاخَرِينَ ﴿82﴾

८२. फिर हम ने दूसरे लोगों को डुबो दिया।

وَإِنَّ مِن شِيعَتِهِۦ لَإِبْرَٰهِيمَ ﴿83﴾

८३. और उस (नूह) के पीछे आने वालों में से ही इब्राहीम भी थे।[1]

إِذْ جَآءَ رَبَّهُۥ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿84﴾

८४. जब कि अपने रब के पास साफ़ (निर्दोष) दिल लाये।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِۦ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿85﴾

८५. उन्होंने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा कि तुम क्या पूज रहे हो।

أَئِفْكًا ءَالِهَةً دُونَ ٱللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿86﴾

८६. क्या तुम अल्लाह के सिवाय गढ़े हुए माबूद चाहते हो?

فَمَا ظَنُّكُم بِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿87﴾

८७. तो यह (बताओ कि) तुम ने सारी दुनिया के रब को क्या समझ रखा है?

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى ٱلنُّجُومِ ﴿88﴾

८८. अब (इब्राहीम ने) एक नज़र तारों की तरफ़ उठाई।

فَقَالَ إِنِّى سَقِيمٌ ﴿89﴾

८९. और कहा कि मैं तो रोगी हूँ।[2]

فَتَوَلَّوْا۟ عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿90﴾

९०. इस पर सब उस से मुँह मोड़े हुए वापस चले गये।

فَرَاغَ إِلَىٰٓ ءَالِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿91﴾

९१. आप (चुपके) उन के माबूदों के क़रीब गये और कहने लगे तुम खाते क्यों नहीं?

مَا لَكُمْ لَا تَنطِقُونَ ﴿92﴾

९२. तुम्हें क्या हो गया कि बात तक नहीं करते हो?

---

[1] شِيعَة (शीअ:) का मतलब गरोह और पैरोकार है, यानी इब्राहीम भी नेकों और तौहीद वालों के इसी गरोह से हैं, जिनको हज़रत नूह ही की तरह अल्लाह ने अपनी तरफ़ मुतवज्जिह होने का ख़ास नसीब अता किया।

[2] आकाश की तरफ़ ग़ौर-फ़िक्र के लिए देखा जैसाकि कुछ लोग ऐसा करते हैं, या अपनी जाति के लोगों को भ्रम में डालने के लिए ऐसा किया जो ग्रहों की चाल को दुनिया की घटनाओं (वाक़ेआत) में असरअंदाज़ मानते थे। यह वाक़ेआ उस समय का है जब उनकी जाति का वह दिन आया जिसे वह बाहर जाकर ईद और मेले के रूप में मनाया करती थी।

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿93﴾

९३. फिर तो (पूरी ताक़त के साथ) दायें हाथ से उन्हें मारने पर पिल पड़े।

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿94﴾

९४. वे (मूर्तिपूजक) दौड़े-भागे आप की तरफ़ आये।

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ﴿95﴾

९५. तो आप ने कहा कि तुम उन्हें पूजते हो जिन्हें तुम ख़ुद बनाते हो।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿96﴾

९६. हालाँकि तुम्हें और तुम्हारी बनाई हुई चीज़ों को अल्लाह ही ने पैदा किया है।[1]

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿97﴾

९७. वे कहने लगे कि इस के लिए एक मकान (आग की जगह) बनाओ और उस (दहकती) आग में इसे डाल दो।

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿98﴾

९८. उन्होंने तो (इब्राहीम) के साथ चाल चलना चाहा, लेकिन हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿99﴾

९९. और (इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो (हिजरत करके) अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ,[2] वह ज़रूर मेरा मार्गदर्शन (रहनुमाई) करेगा।

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿100﴾

१००. हे मेरे रब! मुझे नेक पुत्र अता कर।

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿101﴾

१०१. तो हम ने उसको एक सहनशील (बुर्दबार) पुत्र की ख़ुशख़बरी दी।[3]

---

[1] यानी वह मूर्तियाँ और चित्र भी जिन्हें तुम अपने हाथों से बनाते हो और उन्हें माबूद समझते हो या तुम्हारा आम अमल जो भी तुम करते हो, उन का पैदा करने वाला भी अल्लाह है जैसाकि अहले सुन्नत की आस्था (अक़ीदा) है।

[2] पैग़म्बर इब्राहीम का यह वाक़ेआ बाबिल (इराक़) में पेश आया, आख़िर में यहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) की और शाम (सीरिया) चले गये और वहाँ जाकर पुत्र के लिए दुआ की। (फ़तहुल क़दीर)

[3] حَلِيم (धैर्यवान) कहकर इशारा कर दिया कि बच्चा बड़ा होकर सहनशील (बुर्दबार) होगा।

१०२. फिर जब (बालक) इस उम्र को पहुँचा कि उस के साथ चले-फिरे[1] तो उस (इब्राहीम) ने कहा मेरे प्यारे बेटे! मैं ख़्वाब में अपने आप को तेरी क़ुर्बानी करते हुए देख रहा हूँ, अब तू बता कि तेरा क्या ख़्याल है?[2] बेटे ने जवाब दिया कि पिताजी! जो हुक्म दिया जा रहा है उसकी पैरवी कीजिए, अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में पायेंगे।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَٰبُنَيَّ إِنِّىٓ أَرَىٰ فِى الْمَنَامِ أَنِّىٓ أَذْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَٰٓأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِىٓ إِن شَآءَ اللَّهُ مِنَ الصَّٰبِرِينَ ﴿102﴾

१०३. यानी जब दोनों ने क़ुबूल (स्वीकार) कर लिया और उस (पिता) ने उस (पुत्र) को माथे के बल गिरा दिया।

فَلَمَّآ أَسْلَمَا وَتَلَّهُۥ لِلْجَبِينِ ﴿103﴾

१०४. तो हम ने आवाज़ दी कि हे इब्राहीम!

وَنَٰدَيْنَٰهُ أَن يَٰٓإِبْرَٰهِيمُ ﴿104﴾

१०५. बेशक तूने ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया, बेशक हम भलाई करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَآ ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِينَ ﴿105﴾

१०६. हक़ीक़त में यह खुली आज़माईश थी।[3]

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَٰٓؤُا۟ الْمُبِينُ ﴿106﴾

१०७. और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उस के फ़िदिया के रूप मे दे दिया।[4]

وَفَدَيْنَٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿107﴾

१०८. और हम ने उनकी शुभ चर्चा पिछलों में बाक़ी रखा।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْءَاخِرِينَ ﴿108﴾

---

[1] यानी दौड़धूप के लायक़ हो गया या जवानी के क़रीब हो गया। कुछ कहते हैं कि उस समय यह लड़का १३ साल का था।

[2] पैग़म्बर (ईश्दूत) का ख़्वाब, अल्लाह की वह्यी और हुक्म से होता है, जिस के ऐतबार से अमल करना ज़रूरी होता है, बेटे से विचार-विमर्श (राय-मशविरा) का मक़सद यह जानना था कि बेटा भी अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिए कितना तैयार है।

[3] यानी लाडले बेटे को क़ुर्बानी देने का हुक्म, यह एक बड़ा इम्तेहान था जिस में तू कामयाब रहा।

[4] यह बड़ी क़ुरबानी एक मेंढा था जो अल्लाह ने जन्नत से हज़रत जिब्रील के द्वारा भेजा, (इब्ने कसीर) जो इस्माईल की जगह पर ज़िब्ह किया गया, और फिर इस इब्राहीमी सुन्नत (यादगार) को क़यामत तक अल्लाह की समीपता (क़ुरबत) का एक साधन और ईदे अज़्हा का सब से अच्छा असल बना दिया गया।

१०९. इब्राहीम पर सलाम हो।	سَلٰمٌ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ ﴿109﴾
११०. हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।	كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿110﴾
१११. निश्चय (यक़ीनन) ही वह हमारे ईमानदार बन्दों में से था।	اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿111﴾
११२. और हम ने उसे इसहाक़ नबी की ख़ुशख़बरी दी जो नेक लोगों में से होगा।[1]	وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿112﴾
११३. और हम ने इब्राहीम और इसहाक़ पर बरकतें (विभूतियाँ) नाज़िल किया, और इन दोनों की औलाद में कुछ तो ख़ुशक़िस्मत हैं और कुछ अपनी जानों पर खुला ज़ुल्म करते हैं।	وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰۤى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿113﴾
११४. और यक़ीनन हम ने मूसा और हारून पर बड़ा एहसान किया।	وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿114﴾
११५. और उन्हें और उन की क़ौम को बहुत बड़े दुख-दर्द से मुक्ति (नजात) दे दी।	وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿115﴾
११६. और उनकी मदद की तो वही ग़ालिब (विजयी) रहे।	وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿116﴾
११७. और हम ने उन्हें (साफ़ और) रौशन किताब अता की।	وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿117﴾
११८. और उन दोनों को सीधे रास्ते पर स्थिर (बाक़ी) रखा।	وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿118﴾
११९. और हम ने उन दोनों के लिए पीछे आने वालों में यह बात बाक़ी रखी।	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿119﴾

[1] हज़रत इब्राहीम की ऊपर वाली कहानी के बाद अब एक पुत्र इसहाक़ की और उस के नबी होने की ख़ुशख़बरी देने से मालूम होता है कि इस से पहले जिस पुत्र को क़ुर्बानी देने का हुक्म किया गया था वह इस्माईल थे जो उस समय इब्राहीम (ﷺ) के इकलौते पुत्र थे। इसहाक़ की पैदाईश उस के बाद हुई।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ (120)

१२०. कि मूसा और हारून पर सलाम हो।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ (121)

१२१. बेशक हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (122)

१२२. बेशक ये दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ (123)

१२३. और बेशक इलियास भी पैग़म्बरों में से थे।[1]

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ (124)

१२४. जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम अल्लाह से डरते नहीं हो।

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ (125)

१२५. क्या तुम 'बअ़्ल' नाम की मूर्ति को पुकारते हो और सब से अच्छे ख़ालिक़ को छोड़ देते हो?

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ (126)

१२६. अल्लाह जो तुम्हारा और तुम्हारे पहले के सभी बाप-दादों का रब है।

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ (127)

१२७. लेकिन समुदाय ने उन्हें झुठलाया, तो वे जरूर (अज़ाबों में) हाज़िर रखे जायेंगे।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ (128)

१२८. सिवाय अल्लाह (तआला) के मुख़लिस बंदों के।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ (129)

१२९. और हम ने (इलियास की) शुभ चर्चा पिछले लोगों में बाक़ी रखा।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ (130)

१३०. कि इलियास पर सलाम हो।[2]

[1] यह हज़रत हारून की औलाद में से इस्राईली नबी थे, यह जिस इलाके में भेजे गये उसका नाम बअ़्लबक था। कुछ कहते हैं कि उस जगह का नाम सामरह है जो फ़िलस्तीन का पश्चिम का दरम्यानी इलाका है, यहाँ के लोग बअ़्ल नामी मूर्ति (देवता) के पुजारी थे, कुछ कहते हैं कि यह देवी का नाम था।

[2] इल्यासीन, इलियास ही का एक उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) है, जैसे तूरे सीना को तूरे सीनीन भी कहते हैं। हज़रत इलियास को दूसरी दीनी (धर्मग्रन्थों) किताबों में 'इलिया' भी कहा गया है।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿131﴾

१३१. हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿132﴾

१३२. बेशक वह हमारे ईमानदार बन्दों में से थे।[1]

وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿133﴾

१३३. बेशक लूत (ﷺ) भी पैग़म्बरों में से थे।

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿134﴾

१३४. हम ने उनको और उन के घर वालों को सब को मुक्ति प्रदान (नजात अता) की।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿135﴾

१३५. सिवाय उस बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रह गयी।[2]

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿136﴾

१३६. फिर हम ने दूसरों को तहस-नहस कर दिया।

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ﴿137﴾

१३७. और तुम तो सुबह होने पर उनकी बस्तियों से गुज़रते हो।

وَبِاللَّيْلِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿138﴾

१३८. और रात को भी, क्या फिर भी नहीं समझते?[3]

---

[1] आख़िरी आसमानी किताब क़ुरआन ने नबियों और रसूलों की चर्चा कर के उन के लिए ज़्यादातर जगह पर यह लफ़्ज़ इस्तेमाल किये हैं कि वह हमारे मोमिन (ईमानवाले) बन्दों में से थे, जिसके दो मतलब हैं, एक उनके चरित्र (किरदार) और अमल की फ़ज़ीलत का प्रदर्शन (इज़हार) जो ईमान का ज़रूरी हिस्सा है, ताकि उन लोगों का खण्डन (तरदीद) हो जाये जो बहुत से पैग़म्बरों के बारे में अख़लाक़ी कमज़ोरियों को साबित करते हैं, जैसे तौरात और इंजील के मौजूद नुस्ख़ों में कई पैग़म्बरों के बारे में ऐसी मन गढ़न्त कहानियाँ दर्ज हैं। दूसरा मक़सद उन लोगों का खण्डन (तरदीद) है जो कुछ अम्बिया के बारे में अति (ग़ुलू) करके उन में ख़ुदाई गुण (सिफ़त) और इख़्तियार साबित करते हैं, यानी वह ईशदूत (पैग़म्बर) ज़रूर थे लेकिन थे फिर भी अल्लाह के बन्दे न कि ख़ुद अल्लाह या उस का हिस्सा या साझी।

[2] इस से मुराद हज़रत लूत की पत्नी है जो काफ़िर थी, यह ईमानवालों के संग उस नगरी से बाहर नहीं गई थी क्योंकि उसे अपनी जाति के साथ हलाक होना था, इसलिए वह भी नाश हो गई।

[3] यह मक्कावासियों से संबोधन (ख़िताब) है जो व्यापारिक यात्रा में इन हलाक हुए इलाक़ों से गुज़रते थे, इन से कहा जा रहा है कि तुम सुबह और शाम के समय भी इन बस्तियों से गुज़रते हो जहाँ अब मृत सागर है, जो देखने में बड़ा मकरूह (घृणित) है और बड़ा दुर्गन्धित और बदबूदार। क्या तुम उन्हें देखकर यह बात नहीं समझते कि रसूलों को झुठलाने की वजह से उनका यह बुरा अंजाम हुआ तो तुम्हारे काम का नतीजा इससे अलग क्यों होगा? जब तुम भी

१३९. और यक़ीनन ही यूनुस नबियों में से थे।

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿139﴾

१४०. जब वह भागकर पहुँचे भरी नवका पर।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿140﴾

१४१. फिर नाम निकाला गया तो यह पराजित (मग़लूब) हो गये।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿141﴾

१४२. तो फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह ख़ुद अपने आप को धिक्कारने लग गये।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿142﴾

१४३. तो अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होते।

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿143﴾

१४४. तो लोगों के उठाये जाने के दिन तक मछली के पेट में रहते।

لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿144﴾

१४५. तो हम ने उसे समतल मैदान में डाल दिया तथा वह उस समय रोगी था।

فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿145﴾

१४६. और उसके ऊपर छाया करने वाला एक लता वाला पेड़ हम ने उगा दिया।[1]

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ ﴿146﴾

१४७. और हम ने उन्हें एक लाख बल्कि उस से भी ज़्यादा आदमियों की तरफ़ भेजा।

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿147﴾

१४८. तो वे ईमान लाये और हमने एक मुद्दत तक उन्हें सुख-सुविधा (ऐश्रो-आराम) अता की।

فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿148﴾

१४९. उन से पूछिये कि क्या आप के रब की तो पुत्रियाँ हैं और उन के पुत्र हैं?

فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿149﴾

१५०. या ये उस समय मौजूद थे जब हम ने फ़रिश्तों को नारियाँ पैदा किया।

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿150﴾

वही काम कर रहे हो जो उन्होंने किया तो फिर तुम अल्लाह के अज़ाब से क्योंकर महफ़ूज़ रहोगे?

[1] يَقْطِين (यक़तीन) हर उस लता को कहते हैं जो अपने तने पर खड़ी नहीं होती, जैसे लौकी, कद्दू की लता, यानी उस चटियल भूमि में जहाँ पेड़ था न घर, एक छायादार लता उगाकर उनकी रक्षा की।

أَلَا إِنَّهُم مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ (151)

१५१. ख़बरदार रहो कि ये लोग अपनी मनगढ़न्त से कह रहे हैं।

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ (152)

१५२. कि अल्लाह की औलाद है, बेशक ये केवल झूठे हैं।

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ (153)

१५३. क्या अल्लाह (तआला) ने अपने लिए पुत्रियों को पुत्र पर तरजीह (प्राथमिकता) दी?

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ (154)

१५४. तुम्हें क्या हो गया है, कैसे हुक्म लगाते फिरते हो?

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ (155)

१५५. क्या तुम इतना भी नहीं समझते?

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ (156)

१५६. या तुम्हारे पास (उसका) कोई वाजेह सुबूत है?

فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ (157)

१५७. तो जाओ अगर सच्चे हो तो अपनी ही किताब ले आओ।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ (158)

१५८. और उन लोगों ने तो अल्लाह के और जिन्नात के बीच भी नाता क़ायम किया है, और जबकि जिन्नात ख़ुद इल्म रखते हैं कि वे (इस अक़ीदा के लोग अज़ाब के सामने) पेश किये जायेंगे।

سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ (159)

१५९. जो कुछ ये (अल्लाह के बारे में) बयान कर रहे हैं उस से अल्लाह (तआला) पाक है।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ (160)

१६०. सिवाय अल्लाह (तआला) के पाक बन्दों के।

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ (161)

१६१. यक़ीन करो कि तुम सब और तुम्हारे (झूठे) देवता।

مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ (162)

१६२. किसी एक को भी बहका नहीं सकते।

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ (163)

१६३. सिवाय उन के जो नरक में जाने वाले ही हैं।

१६४. (फ़रिश्तों का क़ौल है) कि हम में से हर एक का मुक़ाम मुक़र्रर है।

وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ (164)

१६५. और हम (अल्लाह की इताअत में) पंक्तिबद्ध (सफ़बस्ता) खड़े हुए हैं।

وَإِنَّا لَنَحْنُ ٱلصَّآفُّونَ (165)

१६६. और उसकी तस्बीह (पवित्रता का गान) कर रहे हैं।[1]

وَإِنَّا لَنَحْنُ ٱلْمُسَبِّحُونَ (166)

१६७. और काफ़िर तो कहा करते थे।

وَإِن كَانُوا۟ لَيَقُولُونَ (167)

१६८. कि अगर हमारे पास अगले लोगों का ज़िक्र (स्मृति) होता।

لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ ٱلْأَوَّلِينَ (168)

१६९. तो हम भी अल्लाह के चुने हुए बन्दे हो जाते।[2]

لَكُنَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ (169)

१७०. लेकिन फिर इस (क़ुरआन) से कुफ़्र (इंकार) कर गये तो जल्द ही जान लेंगे।[3]

فَكَفَرُوا۟ بِهِۦ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ (170)

१७१. और बेशक हमारा वादा पहले ही अपने रसूलों के लिए लागू हो चुका है।

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا ٱلْمُرْسَلِينَ (171)

१७२. कि बेशक वे लोग ही मदद किये जायेंगे।

إِنَّهُمْ لَهُمُ ٱلْمَنصُورُونَ (172)

१७३. और हमारी सेना ग़ालिब (और श्रेष्ठतम) रहेगी।

وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ ٱلْغَٰلِبُونَ (173)

१७४. अब आप कुछ दिनों तक इन से मुँह फेर लीजिए।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ (174)

---

[1] मुराद यह है कि फ़रिश्ते भी अल्लाह की मख़लूक़ और उस के ख़ास ग़ुलाम हैं जो हर समय उसकी इबादत और उसकी तस्बीह और तक़्दीस (पवित्रतागान) में लीन रहते हैं, न कि वह अल्लाह की पुत्रियाँ हैं जैसाकि मिश्रणवादी (मुशरेकीन) कहते हैं।

[2] ذکر (स्मृति) से मुराद कोई अल्लाह की किताब या पैग़म्बर है, यानी मूर्तिपूजक पाक क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले कहा करते थे कि हमारे पास भी कोई आसमानी किताब होती जिस तरह पहले लोगों पर धार्मिक किताब तौरात वग़ैरह नाज़िल हुई, या कोई पैग़म्बर या सचेत (आगाह) करने वाला हमें शिक्षा देने वाला होता तो हम भी अल्लाह के ख़ालिस बंदे बन जाते।

[3] यह चेतावनी और धमकी है कि इस झुठलाने का बुरा अंजाम जल्द उनको मालूम हो जायेगा।

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ (175)	१७५. और उन्हें देखते रहिए, और ये भी आगे चलकर देख लेंगे।
أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ (176)	१७६. क्या ये हमारी यातनाओं की जल्दी मचा रहे हैं?
فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ (177)	१७७. (सुनो!) जब हमारा अज़ाब उनके मैदानों में आयेगा उस समय उनकी जिन को सावधान (आगाह) कर दिया गया था[1] बड़ी बुरी सुबह होगी।
وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ (178)	१७८. और आप कुछ समय तक उनका ध्यान छोड़ दीजिए।
وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ (179)	१७९. और देखते रहिए यह भी अभी-अभी देख लेंगे।
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ (180)	१८०. पाक है आप का रब जो बड़ी इज़्ज़त वाला है, हर उस बात से जो (मूर्तिपूजक) कहा करते हैं।[2]
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ (181)	१८१. और पैग़म्बरों पर सलाम है।
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (182)	१८२. और सभी तारीफ़ें अल्लाह सारी दुनिया के रब के लिए हैं।[3]

[1] जब मुसलमान ख़ैबर फ़त्ह (विजय) करने गये तो यहूदी उन्हें देखकर घबरा गये, जिस पर नबी ﷺ ने भी الله اكبر अल्लाहु अकबर, (अल्लाह बड़ा है) कह कर फ़रमाया :
(خربت خيبر، إنا إذا نزلنا بساحة قوم فساء صباح المنذرين) (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब मा युज़करू फ़िल फ़ख़िज़े, किताबुल जिहाद बाब ग़ज़वति ख़ैबर)

[2] इस में उन कमियों और ऐब से अल्लाह के पाक होने की चर्चा है जो मुश्रिक अल्लाह के लिए बयान करते हैं, जैसे उसकी औलाद या उसका कोई साझी है, यह बुराई बन्दों में है और औलाद व साझीदारों की ज़रूरत भी उन्हीं को है, अल्लाह इन सब बातों से बहुत बड़ा और ऊँचा है, क्योंकि वह बेनियाज़ है, उसे किसी औलाद व साझी की ज़रूरत नहीं।

[3] यह बन्दों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह ने तुम पर एहसान किया है, रसूल भेजे, शरीअत नाज़िल की और पैग़म्बरों ने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम सुनाया, इसलिए तुम अल्लाह का शुक्रिया अदा करो। कुछ कहते हैं कि काफ़िरों का सत्यानाश करके ईमानवालों और रसूलों को बचाया, उस पर अल्लाह के आभारी (शुक्रिया) बनो। حمد (हम्द) का मतलब है बड़ाई के इरादे से तारीफ़, गुणगान (तौसीफ़) और महानता (अज़मत) का बयान करना।

सूरतु साद-३८

سُوْرَةُ صٓ

सूर: साद मक्का में नाजिल हुई, इसमें अट्ठासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

صٓ وَالۡقُرۡاٰنِ ذِى الذِّكۡرِؕ ﴿1﴾

१. साद, इस नसीहत वाले क़ुरआन की क़सम!

بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿2﴾

२. बल्कि काफ़िर घमंड और विरोध (मुख़ालफ़त) में पड़े हुए हैं।[1]

كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيۡنَ مَنَاصٍ ﴿3﴾

३. हम ने इन से पहले भी बहुत सी कौमों को नाश कर डाला, उन्होंने हर तरह की चीख़-पुकार की लेकिन वह समय छुटकारे का न था।

وَعَجِبُوۡۤا اَنۡ جَآءَهُمۡ مُّنۡذِرٌ مِّنۡهُمۡ وَقَالَ الۡكٰفِرُوۡنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۖۚ ﴿4﴾

४. और काफ़िरों को इस बात पर ताज्जुब हुआ कि उन्ही में से एक डराने वाला आ गया, और कहने लगे कि यह जादूगर और झूठा है।

اَجَعَلَ الۡاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىۡءٌ عُجَابٌ ﴿5﴾

५. क्या इस ने इतने सारे देवताओं (माबूदों) को एक ही देवता कर दिया, हक़ीक़त में यह बड़ी अजीब बात है।

وَانۡطَلَقَ الۡمَلَاُ مِنۡهُمۡ اَنِ امۡشُوۡا وَاصۡبِرُوۡا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمۡ ۖۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىۡءٌ يُّرَادُ ۖۚ ﴿6﴾

६. उन के सरदार यह कहते हुए चले कि जाओ अपने देवताओं (माबूदों) पर मज़बूत रहो, बेशक इस बात में कोई मक़सद (स्वार्थ) है।

مَا سَمِعۡنَا بِهٰذَا فِى الۡمِلَّةِ الۡاٰخِرَةِ ۖۚ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا اخۡتِلَاقٌ ۖۚ ﴿7﴾

७. हम ने तो यह बात पुराने धर्मों में भी नहीं सुनी,[2] कुछ नहीं, यह तो केवल मनगढ़न्त है।

---

[1] यानी यह क़ुरआन तो निश्चय (यक़ीनन) ही शक से पाक और उन के लिए नसीहत है जो नसीहत हासिल करें, हाँ काफ़िरों को इस से फ़ायेदा इसलिए नहीं पहुँच सकता कि उन के दिमाग़ में अहंकार (तकब्बुर) और घमंड भरा हुआ है और दिलों में मुख़ालफ़त और दुश्मनी। عِزَّت (इज़्ज़त) का मतलब होता है सच की मुख़ालफ़त में अकड़ना।

[2] पिछले धर्म से मुराद या तो कुरैश ही का अपना धर्म है या फिर इसाई धर्म, यानी यह जिस तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दे रहा है उसके बारे में तो हम ने किसी धर्म में नहीं सुना।

८. क्या हम सभी में से उसी पर (अल्लाह की) वह्यी नाज़िल की गई है? हक़ीक़त में यह लोग मेरी प्रकाशना (वह्यी) की तरफ़ से शक में हैं[1] बल्कि (ठीक यह है कि) उन्होंने मेरे अज़ाब का मज़ा अभी चखा ही नहीं।

ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ⑧

९. क्या उन के पास तेरे ग़ालिब देने वाला रब की रहमत के ख़ज़ाने हैं।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاۗىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ⑨

१०. या आकाश और धरती और उन के बीच की हर चीज़ का राज्य (मुल्क) उन्ही का है, तो फिर ये रस्सियाँ तानकर चढ़ जायें।

اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۣ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ⑩

११. यह भी (विशाल) सेनाओं में से पराजित (छोटी सी) सेना है।

جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ⑪

१२. उन से पहले नूह की क़ौम और आद और कीलों वाले फ़िरऔन[2] ने झुठलाया था।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ⑫

१३. और समूदियों और लूत की क़ौम ने और जंगल के रहने वालों ने भी, यही (विशाल) सेनायें थीं।

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْــــَٔـيْكَةِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الْاَحْزَابُ ⑬

१४. इन में से एक भी ऐसा न था जिस ने रसूलों को झुठलाया न हो, तो मेरा अज़ाब उन पर साबित हो गया।

اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ⑭

---

[1] यानी उनका इंकार इस वजह से नहीं है कि उन्हें मुहम्मद ﷺ की सच्चाई का इल्म नहीं, या आप के अच्छे शऊर (सुबोध) से उन्हें इंकार है बल्कि यह उस प्रकाशना (वह्यी) के बारे में ही शक और शुब्हा में ग्रस्त (मुब्तेला) है जो आप पर नाज़िल हुई, जिस में सब से खुली तौहीद (अद्वैत) की दावत है।

[2] फ़िरऔन को खूँटों वाला इसलिए कहा कि वह ज़ालिम जब किसी पर क्रोधित (ग़ज़बनाक) होता तो उस के हाथों, पैरों और सर में कीलें गाड़ देता, यानी कीलों से जिस तरह किसी चीज़ को मज़बूत कर दिया जाता है उसी तरह उसकी भारी सेना और उस के पैरोकार भी, उस के मुल्क की ताक़त और मज़बूती का सबब थे।

१५. और उन्हें केवल एक तेज चीख़ का इंतेज़ार है, जिस में कोई रुकावट (और ढील) नहीं है।[1]

وَمَا يَنظُرُ هَٰٓؤُلَآءِ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ﴿15﴾

१६. और (उन्होंने) कहा कि हे हमारे रब! हमारा लेखा-जोखा तू हमें हिसाब के दिन से पहले ही अता कर दे।[2]

وَقَالُوا۟ رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ ٱلْحِسَابِ ﴿16﴾

१७. आप उनकी बातों पर सब्र करें और हमारे बंदे दाऊद को याद करें जो बड़ा शक्तिशाली था, बेशक वह बहुत लौटने वाला था।

ٱصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَٱذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُۥدَ ذَا ٱلْأَيْدِ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴿17﴾

१८. हम ने पहाड़ों को उस के अधीन (ताबे) कर दिया था कि उस के साथ सुबह और शाम को तस्बीह करें।

إِنَّا سَخَّرْنَا ٱلْجِبَالَ مَعَهُۥ يُسَبِّحْنَ بِٱلْعَشِىِّ وَٱلْإِشْرَاقِ ﴿18﴾

१९. और (उड़ते) पक्षियों को भी जमा होकर, सब के सब उस के अधीन होते।[3]

وَٱلطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴿19﴾

२०. और हम ने उस के मुल्क को मजबूत कर दिया था, और उसे हिक्मत अता किया था और बात का फ़ैसला (सुझा दिया था)।

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُۥ وَءَاتَيْنَٰهُ ٱلْحِكْمَةَ وَفَصْلَ ٱلْخِطَابِ ﴿20﴾

२१. और क्या तुझे झगड़ा करने वालों की ख़बर मिली जबकि वे दीवार फांदकर मेहराब

وَهَلْ أَتَىٰكَ نَبَؤُا۟ ٱلْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا۟ ٱلْمِحْرَابَ ﴿21﴾

---

[1] दूध दुहने वाला एक बार कुछ दूध दुहकर बच्चे को ऊँटनी या गाय, भैंस के पास छोड़ देता है ताकि उस के दूध पीने से थनों में दूध उतर आये, फिर थोड़े समय बाद बच्चे को ताक़त के ज़ोर पर पीछे हटाकर ख़ुद दूध दूहना शुरू कर देता है, यह दो बार दूध दूहने के बीच जो फ़र्क़ है यह فواق (फ़वाक़) कहलाता है, यानी सूर फूंकने के बाद इतना भी मौक़ा नहीं मिलेगा बल्कि सूर (नरसिंघा) फूंकने की देर होगी कि क़यामत का भूकम्प (ज़लज़ला) शुरू हो जायेगा।

[2] قط (क़ित्त) का मतलब है, हिस्सा, मतलब यहाँ आमालनामा या लेखा-जोखा है, यानी हमारे आमालनामा के ऐतबार से हमारे हिस्सा में अच्छी व बुरी सज़ा जो भी हो हिसाब का दिन आने से पहले हमें दुनिया ही में दे दो।

[3] यानी पौ फटने के समय और आख़िर दिन को पहाड़ भी दाऊद के संग तस्बीह में लीन होते और उड़ते पक्षी भी ज़बूर का पाठ सुनकर हवा में ही जमा हो जाते और उन के साथ तस्बीह (पवित्रतागान) करते।

में (इबादत की जगह पर) आ गये?[1]

إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُۥدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿22﴾

२२. जब ये दाऊद के पास पहुँचे तो ये उन से डर गये, (उन्होंने) कहा डरिये नहीं, हमारा आपसी झगड़ा है, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ुल्म किया है, तो आप हमारे बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए और नाइंसाफ़ी न कीजिए और हमें सीधा रास्ता बता दीजिए।

إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُۥ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿23﴾

२३. (सुनिये!) यह मेरा भाई है[2] इस के पास निन्नानवे भेड़ें हैं और मेरे पास एक ही है, लेकिन यह मुझ से कह रहा है कि अपनी यह एक भी मुझे दे दे और मुझ पर बात में बड़ा सख़्त मुआमला करता है।

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِۦ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ وَظَنَّ دَاوُۥدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُۥ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۩ ﴿24﴾

२४. (आप ने) कहा, उस का अपनी भेड़ों के साथ तेरी एक भेड़ शामिल करने का सवाल ज़रूर तेरे ऊपर एक ज़ुल्म है, और ज़्यादातर भागीदार और साझीदार (ऐसे ही होते हैं कि) एक-दूसरे पर ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी करते हैं, सिवाय उन के जो ईमान लाये और जिन्होंने नेकी के काम किये और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं[3] और दाऊद (عليه السلام) जान गये कि हम ने उनकी परीक्षा ली है फिर तो अपने रब से तौबा करने लगे और आजिज़ी के साथ गिर पड़े,[4] और

---

[1] مِحْرَابٌ (मेहराब) से मुराद वह कमरा है जिस में सब से अलग होकर एकाग्रता (एकसूई) के साथ अल्लाह की इबादत करते थे, दरवाज़े पर दरबान होते ताकि कोई भीतर जाकर इबादत में रुकावट न हो, झगड़ा करने वाले पीछे से दीवार फाँद कर भीतर आ गये।

[2] भाई से मुराद यहाँ दीनी भाई या व्यवसाय (तिजारत) का साझी है या दोस्त है, सब को भाई कहना सही है।

[3] हाँ, इस अख़लाक़ी (नैतिक) ऐब से ईमानवाले महफ़ूज़ रहते हैं, क्योंकि उन के दिलों में अल्लाह का डर होता है और वह नेकी पर जमे होते हैं, इसलिए वह दूसरों पर ज़ुल्म और दूसरों के माल को हड़पने की कोशिश नहीं करते, लेकिन इस स्वभाव (अख़लाक़) के लोग कम ही होते हैं।

[4] وَخَرَّ رَاكِعًا का मुराद यहाँ सज्दे में गिर पड़ना है।

(पूरी तरह से) मुतवज्जिह हो गये।

فَغَفَرْنَا لَهُ ذٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ (25)

२५. तो हम ने भी उनकी यह (बुराई) माफ़ कर दिया, बेशक वह हमारे क़रीब बड़े ऊँचे मुक़ाम और सब से अच्छे ठिकाने वाले हैं।

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ (26)

२६. हे दाऊद! हम ने तुम्हें धरती में ख़लीफ़ा बना दिया तो तुम लोगों के बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो और अपने मन की इच्छाओं की अनुसरण (पैरवी) न करो, बल्कि वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से हटा देगी। बेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटक जाते हैं उन के लिए सख़्त अज़ाब हैं, इसलिए कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۗ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ (27)

२७. और हम ने आकाश और धरती और उन के बीच की चीज़ों को बेकार (और बिला वजह) पैदा नहीं किया।[1] यह शक तो काफ़िरों का है, तो काफ़िरों के लिए आग की ख़राबी है।

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۖ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ (28)

२८. क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाये और नेकी के काम किये, उन के बराबर कर देंगे जो (रोज़) धरती पर फ़साद मचाते रहे, या परहेज़गारों को बदकारों जैसा कर देंगे?

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ (29)

२९. यह मुबारक किताब है जिसे हम ने आप की तरफ़ इसलिए नाज़िल किया है कि लोग इसकी आयतों पर ध्यान दें और ख़्याल करें और अक़्लमंद इस से नसीहत हासिल करें।

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۗ نِعْمَ الْعَبْدُ ۗ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ (30)

३०. और हम ने दाऊद को सुलैमान (नाम का बेटा) अता किया जो बड़ा अच्छा बन्दा था और बड़ा ध्यान लगाने वाला था।

---

[1] बल्कि एक ख़ास मक़सद के लिए पैदा किया है और वह यह कि मेरे बन्दे मेरी इबादत करें। जो ऐसा करेगा उसे अच्छा बदला अता करूँगा और जो मेरी इबादत और फ़रमांबरदारी से मुंह फेरेगा, उस के लिये नरक का अज़ाब है।

३१. जब उन के सामने शाम के समय तेज चलने वाले ख़ास घोड़े पेश किये गये।

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ ﴿31﴾

३२. तो कहने लगे कि मैंने अपने रब की याद पर इन घोड़ों के प्रेम को प्राथमिकता (तरजीह) दी यहाँ तक कि सूरज डूब गया।

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَن ذِكْرِ رَبِّي حَتَّىٰ تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿32﴾

३३. इन घोड़ों को दोबारा मेरे सामने लाओ, फिर पिंडलियों और गरदनों पर हाथ फेरने लगे।

رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ﴿33﴾

३४. और हम ने सुलैमान की परीक्षा ली और उन के सिंहासन पर एक धड़ डाल दिया,[1] फिर वह ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो गये।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ﴿34﴾

३५. कहा कि हे मेरे रब मुझे माफ़ कर और मुझे ऐसा मुल्क अता कर जो मेरे सिवाय किसी (इंसान) के लायक न हो, तू बड़ा ही दाता है।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنبَغِي لِأَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِي ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿35﴾

३६. तो हम ने हवा को उन के वश में कर दिया, वह आप के हुक्म से जहाँ आप चाहते नर्मी से पहुँचा दिया करती थी।[2]

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ﴿36﴾

---

[1] यह परीक्षा (इम्तेहान) क्या थी, कुर्सी पर डाला गया धड़ किस चीज का था और इस का मतलब क्या है? इसकी भी कोई तफ़सील क़ुरआन व हदीस में नहीं मिलती। हाँ, कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने सहीह हदीस से साबित एक कहानी से इस को सम्बन्धित किया है, जो यह है कि हजरत सुलैमान ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी बीवियों से (जिन की तादाद ७० या ९० थी) संभोग करूँगा ताकि उन से बहादुर घुड़सवार पैदा हों जो अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्ध (जिहाद) करें और इस पर إن شاء الله (अगर अल्लाह ने चाहा) नहीं कहा (यानी केवल अपनी युक्ति (सलाहियत) पर पूरा भरोसा कर लिया)। नतीजा यह हुआ कि सिवाय एक के कोई पत्नी गर्भवती (हामला) नहीं हुई और गर्भवती बीवी ने भी जो बच्चा जना वह भी अपूर्ण यानी आधा था। नबी ﷺ ने कहा, अगर सुलैमान إن شاء الله कह लेते तो सब बहादुर पैदा होते (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुल इस्तिसना)। इन व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के ख़्याल में शायद إن شاء الله न कहना या केवल अपने तरीके पर मुत्मईन होना, यही परीक्षा हो जिस में हजरत सुलैमान ग्रस्त (मुब्तेला) हुए और कुर्सी पर डाला जाने वाला बच्चा यही नाक़िस बच्चा हो। والله أعلم

[2] यानी हम ने सुलैमान की यह दुआ सुन ली और ऐसा मुल्क अता किया कि हवा भी उन के अधीन (मातहत) थी। यहाँ हवा को कोमलता (धीमीगति) से चलती बताया, जबकि सूर:

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿37﴾

३७. और (शक्तिशाली) जिन्नात को भी (उन के अधीन कर दिया) और हर घर बनाने वाले को और डुबकी लगाने वाले को।

وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿38﴾

३८. और दूसरे (जिन्नात) को भी जो जंजीरों में जकड़े रहते।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿39﴾

३९. यह है हमारा वरदान (अतिया) अब तू एहसान कर या रोक रख कुछ हिसाब नहीं।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿40﴾

४०. और उन के लिए हमारे पास बड़ी क़ुर्बत (निकटता) है और बहुत अच्छा ठिकाना है।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿41﴾

४१. और हमारे बन्दे अय्यूब की (भी) चर्चा कर जबकि उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने तकलीफ़ और दुख पहुँचाया है।[1]

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿42﴾

४२. अपना पैर मारो, यह गुस्ल का ठंडा और पीने का पानी है।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿43﴾

४३. और हम ने उसे उसका पूरा परिवार अता किया, बल्कि उतना ही और भी उसी के साथ अपनी ख़ास रहमत से, और अक़्लमंदों की शिक्षा के लिए।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ۭ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿44﴾

४४. और अपने हाथ में तीलियों की एक झाड़ लेकर मार दे और क़सम न तोड़,[2] सच तो यह

अम्बिया आयत नं॰ ८१ में उसे तीव्र और तेज कहा। इसका मतलब यह है कि हवा की स्वाभाविक (आम) गति तेज है किन्तु सुलैमान के लिए उसे धीमी कर दिया गया या जरूरत के ऐतबार से वह कभी तेज होती कभी धीमी जैसे सुलैमान चाहते। (फ़तहुल क़दीर)

[1] हज़रत अय्यूब (ﷺ) का रोग और उस में उनका सब्र मशहूर है, जिस के अनुसार अल्लाह तआला ने परिवार और माल को तबाह किया और रोग के ज़रिये उनका इम्तेहान लिया, जिस में वह कई साल ग्रस्त (मुब्तिला) रहे।

[2] रोग के दिनों में सेविका पत्नी से किसी बात पर नाराज होकर हज़रत अय्यूब ने उसे सौ कोड़े मारने की क़सम खाली थी, स्वस्थ (सेहतयाब) होने के बाद अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने कहा कि सौ तिंकों के झाड़ू से एक बार उसे मार दे, तेरी कसम पूरी हो जायेगी।

है कि हम ने उसे बड़ा सब्र वाला बन्दा पाया, वह बड़ा नेक बन्दा था, और बड़ा ही ध्यान करने वाला।

وَاذْكُرْ عِبَادَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ﴿45﴾

४५. और हमारे बंदों इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब का भी (लोगों से) बयान करो जो हाथों और आँखों वाले थे।

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿46﴾

४६. हम ने उन्हें एक ख़ास बात यानी आख़िरत की याद के साथ ख़ास तौर से सम्बन्धित कर दिया था।

وَإِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿47﴾

४७. और यह सभी हमारे क़रीब चुने हुए और सब से अच्छे लोगों में थे।

وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ﴿48﴾

४८. और इस्माईल, यसअ और ज़ुलकिफ़्ल का भी बयान कीजिए, यह सब से अच्छे लोग थे।

هَٰذَا ذِكْرٌ ۚ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ﴿49﴾

४९. यह नसीहत है, और यक़ीन करो कि नेक लोगों के लिए सब से अच्छी जगह है।

جَنَّاتِ عَدْنٍ مُفَتَّحَةً لَهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿50﴾

५०. यानी हमेशा रहने वाली जन्नत जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले हुए हैं।

مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿51﴾

५१. जिन में (चैन से) तकिया लगाये बैठे हुए तरह-तरह के मेवे (फल) और कई तरह की पीने वाली चीज़ों की माँग कर रहे हैं।

وَعِنْدَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿52﴾

५२. और उन के पास नीची निगाहों वाली बराबर उम्र वाली हूरें होंगी।[1]

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿53﴾

५३. यह है जिसका वादा तुम से हिसाब के दिन के लिए किया जाता था।

---

[1] यानी जिनकी निगाहें अपने पति से आगे नहीं जायेंगी। أتراب यह ترب का बहुवचन (जमा) है, बराबर उम्र या लगातार ज़ीनत और हुस्न से सुशोभित मुज़य्यन। (फ़तहुल क़दीर)

إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُۥ مِن نَّفَادٍ ﴿54﴾

५४. निश्चय ही यह रिज़्क़ हमारा (ख़ास) उपहार (इंआम) हैं जिनका कभी अन्त ही नहीं ।[1]

هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّٰغِينَ لَشَرَّ مَـَٔابٍ ﴿55﴾

५५. यह तो हुआ बदला, (याद रखो कि) सरकशों के लिए बड़ी बुरी जगह है ।

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿56﴾

५६. नरक है जिस में वे जायेंगे, (आह!) कैसा बुरा बिस्तर है ।

هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿57﴾

५७. यह है, तो उसे चखें, गर्म पानी और पीप ।

وَءَاخَرُ مِن شَكْلِهِۦٓ أَزْوَٰجٌ ﴿58﴾

५८. और कुछ दूसरी तरह की कई सजायें ।

هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿59﴾

५९. यह एक समुदाय (मजमूआ) है जो तुम्हारे संग (आग में) जाने वाला है, उन के लिए कोई स्वागत नहीं, यही तो नरक में जाने वाले हैं ।

قَالُوا بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿60﴾

६०. (वे) कहेंगे कि बल्कि तुम ही हो जिन के लिए कोई स्वागत नहीं, तुम ही ने तो इसे पहले ही से हमारे सामने ला रखा था, तो रहने की बड़ी बुरी जगह है ।

قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿61﴾

६१. (वे) कहेंगे कि हे हमारे रब ! जिस ने उसे (कुफ़्र की रीति) हमारे लिए सब से पहले निकाली हो, उस के हक़ में नरक की दोगुनी सज़ा कर दे ।

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿62﴾

६२. और (नरकवासी) कहेंगे कि क्या बात है कि वह लोग हमें दिखाई नहीं देते, जिनकी गिन्ती हम बुरे लोगों में करते थे ।[2]

---

[1] رزق (जीविका) का मतलब वरदान (अतिया) है, और هذا (यह) से हर तरह की ऊपर बयान की गई नेमतें और वह इज़्ज़त-एहतेराम मुराद है जिन के जन्नत वाले मज़े ले रहे होंगे । نفاد का मतलब आख़िर और बिला रुकावट है, यह नेमतें भी कभी न ख़त्म होने वाली और इज़्ज़त-एहतेराम भी स्थाई (मुस्तक़िल) ।

[2] أشرار (दुष्टों) से मतलब ग़रीब मुसलमान हैं, जैसे अम्मार, ख़ब्बाब, सुहैब, बिलाल, सलमान (رضی اللہ عنہم) वग़ैरह । उन्हें मक्का के सरदार दुश्मनी से 'बुरे लोग' कहते थे, अब भी दुराचारी सच्चे लोगों और नेक लोगों को कट्टरपंथी, आतंक़वादी और उग्रवादी जैसे उप नाम देते हैं ।

६३. क्या हम ने ही उनका मज़ाक बना रखा था या हमारी आँखें उन से बहक गई हैं।

أَتَّخَذْنَٰهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ﴿63﴾

६४. यक़ीन करो कि नरकवासियों का यह झगड़ा ज़रूर ही होगा।

إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿64﴾

६५. कह दीजिए कि मैं तो केवल होशियार कर देने वाला हूं और सिवाय एक अल्लाह ज़बरदस्त के दूसरा कोई इबादत (उपासना) के लायक़ नहीं।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿65﴾

६६. जो रब है आकाशों का और धरती का और जो कुछ उन के बीच है, वह ज़बरदस्त (महान) और बड़ा माफ़ करने वाला है।

رَبُّ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿66﴾

६७. (आप) कह दीजिए कि यह बहुत बड़ी ख़बर है।

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيمٌ ﴿67﴾

६८. जिस से तुम मुँह फेर रहे हो।

أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿68﴾

६९. मुझे उन उच्च पद वाले फ़रिश्तों (की बातचीत) का तनिक भी इल्म ही नहीं जबकि वे तक़रार कर रहे थे।[1]

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿69﴾

७०. मेरी तरफ़ सिर्फ़ यही वह्यी की जाती है कि मैं तो साफ़ तौर से सावधान (आगाह) कर देने वाला हूं।

إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿70﴾

७१. जब कि आप के रब ने फ़रिश्तों से कहा[2] कि मैं मिट्टी से इंसान को बनाने वाला हूं।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّي خَٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن طِينٍ ﴿71﴾

---

[1] ملاأعلى से मुराद फ़रिश्ते हैं, यानी वे किस बात पर वाद-विवाद (तक़रार) कर रहे हैं मैं नहीं जानता? मुमकिन है इस तक़रार से मुराद वह बातचीत है जो आदम की पैदाईश के समय हुई जैसा कि आगे इसकी चर्चा आ रही है।

[2] यह कहानी इस से पहले सूर: बक़र:, सूर: आराफ़, सूर: हिज्र, सूर: बनी इस्राईल और सूर: कहफ़ में बयान हो चुकी है, अब यहाँ भी संक्षेप (मुख़्तसर) में बयान किया जा रहा है।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿72﴾

७२. तो जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूं और उस में अपनी रूह फूंक दूं[1] तो तुम सब उस के सामने सज्दे में गिर जाना ।[2]

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿73﴾

७३. तो सभी फ़रिश्तों ने सज्दा किया ।

إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿74﴾

७४. लेकिन इब्लीस ने (नहीं किया) उस ने घमंड किया और वह था काफ़िरों में से ।

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْعَالِينَ ﴿75﴾

७५. (अल्लाह तआला ने) कहा कि हे इब्लीस तुझे उसको सज्दा करने से किस चीज ने रोका जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया ।[3] क्या तू कुछ तकब्बुर में आ गया है या तू ऊंचे दर्जे वालों में से है?

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ﴿76﴾

७६. (उस ने) जवाब दिया कि मैं इस से बेहतर हूं, तूने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया है ।[4]

---

[1] यानी वह आत्मा (रूह) जिसका मैं मालिक हूं, मेरे सिवाय इसका कोई हक नहीं रखता, और जिसके फूंकते ही यह मिट्टी का पुतला ज़िन्दगी और ताक़त से युक्त (बहरावर) हो जायेगा मानव जाति की श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) और प्रतिष्ठा (इज़्ज़त) के लिए यही बहुत है कि उस में वह रूह फूंकी गई है जिसे अल्लाह ने अपनी रूह कहा है ।

[2] यह सज्दा (नतमस्तक होना) शुक्रिया या एहतेराम का सज्दा है इबादत का सज्दा नहीं । यह सम्मान का सज्दा पहले जायेज़ था, इसीलिए अल्लाह ने आदम के लिए फ़रिश्तों को इसका हुक्म दिया, अब इस्लाम में सम्मान का सज्दा भी किसी के लिए जायेज़ नहीं । हदीस में आता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : "अगर यह जायेज़ होता तो मैं पत्नी को हुक्म देता कि अपने पति को सज्दा करे ।" (मिश्कात, किताबुन्निकाह, बाबु इश्रतिन्निसाए ससंदर्भ (माख़ूज़) तिर्मिज़ी, अलबानी ने कहा कि अपने गवाहों के सबब यह हदीस सही है) ।

[3] यह भी इंसान की इज़्ज़त और बड़ाई को ज़ाहिर करने ही के लिए फ़रमाया नहीं तो हर चीज़ का विधाता अल्लाह ही है ।

[4] यानी शैतान ने अपने भ्रम में यह समझा कि आग मिट्टी से बेहतर है, हालांकि यह सभी एक जैसे हैं, इन में से किसी को दूसरे पर प्रधानता (फ़ज़ीलत) किसी सबब से ही हासिल होती है और यह सबब आग के सामने मिट्टी के हिस्से में आई है कि अल्लाह ने उसी से आदम को अपने हाथों से बनाया, फिर उस में अपनी रूह फूंकी, इस वजह से मिट्टी ही को आग के मुक़ाबिल इज़्ज़त और फ़ज़ीलत हासिल है, इस के सिवाय आग का काम जलाकर राख बना देना है जबकि मिट्टी उस के ख़िलाफ़ कई तरह की पैदावार का ज़रिया है ।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿77﴾

७७. कहा कि तू यहाँ से निकल जा, तू तिरस्कृत (मरदूद) हुआ।

وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿78﴾

७८. और तुझ पर क़यामत के दिन तक मेरी लानत और धित्कार है।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿79﴾

७९. कहने लगा कि हे मेरे रब! मुझे लोगों के उठ खड़े होने के दिन तक मुहलत अता कर।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿80﴾

८०. (अल्लाह तआला ने) कहा कि तू मुहलत दिये जाने वालों में से है।

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿81﴾

८१. मुक़र्रर वक़्त के दिन तक।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿82﴾

८२. कहने लगा, फिर तो तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं इन सब को ज़रूर भटकाऊँगा।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿83﴾

८३. सिवाय तेरे उन बन्दों के जो चुने हुए [और प्यारे (पाक)] हों।

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿84﴾

८४. कहा कि सच तो यह है, और मैं सच ही कहा करता हूँ।

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿85﴾

८५. कि तुझ से और तेरे सभी पैरोकारों से मैं (भी) नरक को भर दूँगा।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿86﴾

८६. कह दीजिए कि मैं इस पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿87﴾

८७. यह तो सभी दुनिया वालों के लिए सरासर नसीहत और ज़िक्र है।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿88﴾

८८. बेशक तुम इसकी हक़ीक़त (वास्तविकता) को कुछ ही समय के बाद (सही ढंग से) जान लोगे।

सूरतुज़्ज़ुमर-३९

सूर: ज़ुमर* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पचहत्तर आयतें और आठ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. इस किताब का नाज़िल करना अल्लाह (तआला) ग़ालिब (प्रभावशाली) और हिक्मत वाले की तरफ़ से है।

२. बेशक हम ने इस किताब को हक़ के साथ आप की तरफ़ नाज़िल किया है[1] तो आप केवल अल्लाह ही की इबादत करें उसी के लिए दीन को शुद्ध (ख़ालिस) करते हुए।[2]

३. सुनो! अल्लाह (तआला) ही के लिए ख़ालिस इबादत करना है[3] और जिन लोगों ने उस के सिवाय औलिया बना रखें हैं (और कहते हैं) कि हम इनकी इबादत केवल इसलिए करते हैं कि यह (बुज़ुर्ग) अल्लाह के क़रीब हम को पहुँचा

سُوْرَةُ الزُّمَرِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ②

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَاۤ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ③

---

* **तफ़सीर सूर: अज़्ज़ुमर** : हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह ﷺ हर रात सूर: बनी इस्राईल और सूर: ज़ुमर का पाठ (तिलावत) करते थे (सहीह तिर्मिज़ी में इसको अलबानी ने सहीह कहा है)।

[1] यानी इस में तौहीद (अद्वैत) और रिसालत (दूतत्व), मआद (पुनर्जीवन) और हुक्म और अनिवार्य कर्तव्यों (फ़राइज़) को जो साबित किया गया है, वह सब सच है और इन्हीं के मानने और पैरवी करने में इंसान की नजात है।

[2] दीन دين का मतलब यहाँ इबादत (आराधना) और इताअत है और إخلاص का मतलब सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए नेकी का काम करना है।

[3] यह उसी इबादत को ख़ालिस करने पर ज़ोर दिया गया है, जिसका हुक्म इस के पहले की आयत में है कि इबादत और इताअत एक सिर्फ़ अल्लाह ही का हक़ है, न उसकी इबादत में किसी को साझी बनाना वैध (जायेज़) है, न इताअत ही का उसके सिवा कोई हक़दार है। हाँ, रसूल ﷺ की इताअत को ख़ुद अल्लाह ही ने अपनी इताअत कहा है, अत: रसूल ﷺ का फ़रमांबर्दार अल्लाह ही का फ़रमांबर्दार है किसी दूसरे का नहीं, फिर इबादत में यह बात भी नहीं, इसलिए कि इबादत अल्लाह के सिवाय किसी बड़े से बड़े रसूल की भी जायेज़ नहीं तो कहाँ आम इंसानों की, जिनको लोगों ने मनमानी अल्लाह के हुक़ूक़ का मालिक बना रखा है। ﴿مَا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ﴾ "अल्लाह की तरफ़ से इस पर कोई दलील नहीं।"

दें,[1] ये लोग जिस बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उसका (इंसाफ़ वाला) फ़ैसला अल्लाह (तआला) ख़ुद कर देगा, झूठे और नाशुक्रे (लोगों) को अल्लाह (तआला) रास्ता नहीं दिखाता।

लَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④

४. अगर अल्लाह (तआला) का इरादा औलाद ही का होता तो अपनी मख़लूक़ (सृष्टि) में से जिसे चाहता चुन लेता (लेकिन) वह तो पाक है, वह वही अल्लाह (तआला) है एक और ताक़तवाला

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ⑤

५. बड़े अच्छे तरीक़े से उस ने आकाशों और धरती को बनाया, वह रात को दिन पर और दिन को रात पर लपेट देता है,[2] और उस ने सूरज और चाँद को काम पर लगा रखा है। हर एक मुक़र्रर मुद्दत तक चल रहा है, यक़ीन करो कि वही ग़ालिब और गुनाहों का माफ़ करने वाला है।

خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّن بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ⑥

६. उस ने तुम सब को एक ही जान से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और तुम्हारे लिए जानवरों में से आठ जोड़े (नर-मादा) उतारे, वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में एक रूप के बाद दूसरे रूप में बनाता है।[3] तीन-तीन अंधेरों में,[4] यही अल्लाह (तआला)

---

[1] इस से वाज़ेह है कि मक्के के मूर्तिपूजक अल्लाह ही को विधाता, रोज़ी देने वाला और दुनिया का चलाने वाला मानते थे, फिर दूसरों की इबादत क्यों करते थे ? इसका जवाब वह यह देते थे जो क़ुरआन ने यहाँ नक़ल किया है कि शायद उन के ज़रिया हमें अल्लाह की नज़दीकी मिल जाये या अल्लाह के क़रीब हमारी सिफ़ारिश कर दें, जैसे दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया :

﴿هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ﴾

"यानी ये अल्लाह के क़रीब हमारे सिफ़ारिशी हैं।" (यूनुस-१८)

[2] تَكْوِيرٌ (तकवीर) का मतलब है, एक चीज़ को दूसरी चीज़ पर लपेटना, रात को दिन पर लपेटने का मतलब है, रात का दिन को ढाँपना, यहाँ तक की उसका नूर ख़त्म हो जाये और दिन को रात पर लपेटने का मतलब दिन का रात को ढाँपना है, यहाँ तक कि उसका अंधेरा ख़त्म हो जाये। यह वही मतलब है जो يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ (अल-आराफ़-५४) का है।

[3] यानी माँ के गर्भाशय (रिहम) में कई रूपों से गुज़रता है। पहले मनी, फिर जमा ख़ून, फिर गोश्त का टुकड़ा, फिर हड्डियों का ढाँचा, जिस के ऊपर गोश्त का कपड़ा इन सभी रूपों से गुज़रने के बाद पूरा इंसान तैयार होता है।

[4] एक माँ के पेट का अंधेरा, दूसरे गर्भाशय (रिहम) का अंधेरा और तीसरा उस झिल्ली या पर्दे का अंधेरा जिस में बच्चा लिपटा हुआ होता है।

तुम्हारा रब है, उसी के लिए मुल्क है, उस के सिवाय कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ भटक रहे हो?

७. अगर तुम नाशुक्री करो तो (याद रखो कि) अल्लाह (तआला) तुम (सब से) बेनियाज़ है, और वह अपने बन्दों की नाशुक्री से ख़ुश नहीं और अगर तुम शुक्रिया अदा करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसन्द करेगा[1] और कोई किसी का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम सबका लौटना तुम्हारे रब ही की तरफ़ है, तुम्हें वह बतला देगा जो तुम करते थे, बेशक वह दिलों तक की बातों को जानता है।

إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ ۖ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۖ وَإِن تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑦

८. और इंसान को जब कभी दुख पहुँचता है तो वह ख़ूब मुतवज्जिह होकर अपने रब को पुकारता है, फिर जब अल्लाह (तआला) अपने पास से सुख दे देता है तो वह उस से पहले जो दुआ करता था उसे (पूरी तरह) भूल जाता है, और अल्लाह (तआला) के साझीदार मुक़र्रर करने लगता है, जिस से (दूसरों को भी) उस के रास्ते से भटकाये। (आप) कह दीजिए कि अपने कुफ़्र का फ़ायेदा कुछ दिन और उठा लो, (आख़िर में) तू नरकवासियों में होने वाला है।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ⑧

९. भला वह इंसान जो रातों के समय सज्दा और खड़े होने की हालत में इबादत (उपासना) में गुज़ारता हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता हो, (और जो उसके ख़िलाफ़ हो, बराबर हो सकते हैं), बताओ तो आलिम और जाहिल क्या

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ⑨

[1] यानी कुफ़्र अगरचे इन्सान अल्लाह की चाहत ही से करता है, क्योंकि उसके चाहे बिना कुछ नहीं होता न हो ही सकता है फिर भी अल्लाह तआला कुफ़्र को पसंद नहीं करता, उसकी ख़ुशी हासिल करने का रास्ता तो शुक्रिया ही है न कि नाशुक्री, यानी उसकी चाहत और चीज़ है और उसकी ख़ुशी दूसरी चीज़ है, जैसा कि पहले भी इस नुक़ते की तफ़सीर कुछ जगहों पर की जा चुकी है। देखिए सूर: बक़र: की आयत नं॰ २५३ की तफ़सीर।

बराबर हैं? बेशक नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक़्लमंद हों ।[1]

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۭ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ۭ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑩

१०. कह दो कि हे मेरे ईमानवाले बंदो! अपने रब से डरते रहो जो इस दुनिया में नेकी करते हैं उन के लिए बेहतर बदला है, और अल्लाह (तआला) की धरती बड़ी कुशादा है,[2] सब्र करने वालों को ही उनका पूरा-पूरा अनगिनत बदला दिया जाता है ।

قُلْ اِنِّىْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ⑪

११. (आप) कह दीजिए कि मुझे हुक्म दिया गया है कि अल्लाह (तआला) की इस तरह इबादत करूँ कि उसी के लिए इबादत को ख़ालिस कर लूँ ।

وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ⑫

१२. और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं पहले आज्ञाकारी (फ़रमाँबरदार) बन जाऊँ ।

قُلْ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑬

१३. कह दीजिए कि मुझे तो अपने रब की नाफ़रमानी करते हुए बड़े दिन के अज़ाब का डर लगता है ।

قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ⑭

१४. कह दीजिए कि मैं तो ख़ालिस तौर से सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करता हूँ ।

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ۭ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ⑮

१५. तुम उस के सिवाय जिसकी चाहो इबादत करते रहो, कह दीजिए कि हक़ीक़त में घाटे में वही हैं जो ख़ुद अपने आप को और अपने परिवार को क़यामत के दिन नुक़सान में डाल देंगे, याद रखो कि खुला घाटा यही है ।

[1] और यह ईमान वाले ही हैं न कि काफ़िर । अगरचे वह ख़ुद को अक़्लमंद और आलिम ही समझते हों, लेकिन जब वह अपनी नीति और अक़्ल का इस्तेमाल करके ग़ौर-फ़िक्र ही नहीं करते और शिक्षा-दिक्षा (इबरत) नहीं हासिल करते तो वह जानवर की तरह अक़्ल और इल्म से महरूम हैं ।

[2] यह इशारा है उस बात की तरफ़ कि अगर अपने देश में ईमान और तक़वा पर अमल करना कठिन हो तो वहाँ रहना अच्छा नहीं, बल्कि वहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) करके ऐसे इलाक़े में चले जाना चाहिए, जहाँ इन्सान अल्लाह के हुक्म के ऐतबार से ज़िन्दगी गुज़ार सके और जहाँ ईमान और तक़वा के रास्ते में रूकावट न हो ।

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ۚ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ⑯

१६. उन्हें नीचे-ऊपर से आग की लपटें छत की तरह ढांक रही होंगी, यही अज़ाब है जिन से अल्लाह (तआला) अपने बंदों को डरा रहा है। हे मेरे बन्दो! मुझ से डरते रहो।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ⑰

१७. और जो लोग अल्लाह के सिवाय तागूत (दूसरों) की इबादत से बचते रहे और तन-मन से अल्लाह (तआला) की तरफ़ आकर्षित (मायल) रहे, वे ख़ुशख़बरी के हक़दार हैं, तो मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۚ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ⑱

१८. जो बात को कान लगा कर सुनते हैं फिर जो बड़ी अच्छी बात हो[1] उस के अनुसार काम करते हैं, यही हैं जिनको अल्लाह (तआला) ने हिदायत दिया है और यही अक़्लमंद भी हैं।[2]

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۚ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِى النَّارِ ⑲

१९. भला जिस इंसान पर अज़ाब की बात साबित हो चुकी है[3] तो क्या आप उसे जो नरक में है छुड़ा सकते हैं।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَعْدَ اللّٰهِ ۚ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ⑳

२०. हां, वे लोग जो अपने रब का डर रखते रहे उन के लिए ऊंचे घर हैं जिन के ऊपर भी बनी अटारियां हैं[4] और उन के नीचे पानी के चश्में बह रहे हैं। अल्लाह का वादा है और वह वादा नहीं तोड़ता।

---

[1] أَحْسَنُ (सब से अच्छा) से मज़बूत और पक्की बात मुराद है, या अहकाम बातों में सब से अच्छा या अज़ीमत और हुक्म में से निश्चय, या सज़ा के मुक़ाबिल माफ़ी को पसंद करते हैं।

[2] क्योंकि उन्होंने अपनी अक़्ल से फ़ायेदा उठाया है, जबकि दूसरों ने अपनी अक़्लों से फ़ायेदा नहीं उठाया।

[3] यानी तक़दीर और क़िस्मत के बिना पर उस के अज़ाब का हक़ साबित हो चुका है। इस तरह के ज़ुल्म, कुफ़्र, गुनाह में अपनी आख़िरी हद को पहुंच गया जहां से उसकी वापसी मुमकिन नहीं, जैसे अबूजहल और आस पुत्र वाएल वग़ैरह, और गुनाहों ने उसको पूरी तरह घेर लिया और वह नरकवासी हो गया।

[4] इसका मतलब यह है कि जन्नत में दर्जे होंगे एक के ऊपर एक। जैसे यहां कई मंज़िला इमारत (भवन) हैं जन्नत में भी दर्जों के हिसाब से एक-दूसरे के ऊपर अटारियां होंगी, जिन के बीच जन्नतियों की मर्ज़ी से दूध, शहद, शराब और पानी की नहरें जारी रहेंगी।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ (21)

२१. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी उतारता है और उसे धरती के चश्मों में पहुँचाता है, फिर उसी के जरिये कई तरह की खेतियाँ उगाता है फिर वे सूख जाती हैं और आप उन्हें पीले रंग में देखते हैं फिर उन्हें चूरा-चूरा कर देता है। इस में अक़्लमंदों के लिए बड़ी नसीहत है।

أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (22)

२२. क्या वह इंसान जिसका सीना अल्लाह (तआला) ने इस्लाम के लिए खोल दिया है तो वह अपने रब की तरफ़ से एक नूर पर है,[1] और हलाकत है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह की याद से (असर नहीं लेते बल्कि) कठोर हो गये हैं, यह लोग पूरी तरह से भटकावे में पड़े हुए हैं।

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ (23)

२३. अल्लाह (तआला) ने सब से बेहतर बात नाज़िल की है, जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती-जुलती और बार-बार दोहराई हुई आयतों की है,[2] जिस से उन लोगों के शरीर काँप उठते हैं जो अपने रब का डर रखते हैं, आख़िर में उन के जिस्म और दिल अल्लाह (तआला) के ज़िक्र की तरफ़ (नरम होकर) झुक जाते हैं।[3] यह है अल्लाह (तआला) की हिदायत,

[1] यानी जिसको सच को मानने और भलाई का रास्ता अपनाने की ख़ुशनसीबी अल्लाह की तरफ़ से मिल जाये तो वह इस सीना खोल दिये जाने के सबब अल्लाह के प्रकाश (नूर) पर हो, क्या वह उस के बराबर हो सकता है जिसका दिल इस्लाम के लिए कठोर और उस का सीना तंग हो और वह गुमराही के अंधकारों में भटक रहा हो।

[2] أحسنُ الحديث (बेहतरीन बात) से मुराद वह्यी पाक क़ुरआन है। मिलती-जुलती का मतलब अच्छी भाषा, मोजिज़े और असर और अच्छे मायने में उस के सारे हिस्से एक-दूसरे से मिलते हैं, यानी यह भी आसमानी किताबों से मिलता है यानी उन के सदृश (तरह) है।

[3] यानी जब अल्लाह की दया और रहमत और मेहरबानी की उम्मीद उन के दिलों में जागती है तो उन में तपन और नर्मी पैदा हो जाती है और वह अल्लाह के ज़िक्र में लीन हो जाते हैं। हज़रत क़तादह ﷺ कहते हैं कि इस में अल्लाह के दोस्तों के गुणों (सिफ़त) का बयान किया गया है कि अल्लाह के डर से उन के दिल काँप जाते हैं, उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं और उन के दिलों को अल्लाह की याद से इत्मिनान होता है।

जिस के ज़रिये जिसे चाहे सच्चे रास्ते पर लगा देता है, और जिसे अल्लाह (तआला) ही रास्ता भुला दे उसका मार्गदर्शक (रहनुमा) कोई नहीं।

२४. भला जो इंसान क़यामत के दिन की बहुत ज़्यादा बुरे अज़ाबों की ढाल अपने मुँह को बनायेगा (ऐसे) ज़ालिमों से कहा जायेगा कि अपने किये हुए अमलों का (मज़ा) चखो।[1]

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِۦ سُوٓءَ ٱلْعَذَابِ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ وَقِيلَ لِلظَّٰلِمِينَ ذُوقُوا۟ مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿24﴾

२५. उन से पहले वालों ने भी झुठलाया फिर उन पर वहाँ से अज़ाब आ पड़ा जहाँ से उनको अंदाज़ा भी न था।

كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَىٰهُمُ ٱلْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿25﴾

२६. और अल्लाह (तआला) ने उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में अपमान का मज़ा चखाया[2] और अभी आख़िरत का तो बहुत सख़्त अज़ाब है। काश! ये लोग समझ लें।

فَأَذَاقَهُمُ ٱللَّهُ ٱلْخِزْىَ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ ٱلْءَاخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ﴿26﴾

२७. निश्चय ही हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल बयान कर दी है, हो सकता है कि वे नसीहत (शिक्षा) हासिल कर लें।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿27﴾

२८. अरबी भाषा में क़ुरआन है जिस में कोई टेढ़ापन नहीं, हो सकता है कि वह संयम (तक़्वा) इख़्तियार कर लें।[3]

قُرْءَانًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِى عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿28﴾

---

[1] यानी क्या यह इंसान उस इंसान के बराबर हो सकता है जो क़यामत के दिन बेख़ौफ़ और शांत (मुतमईन) होगा?

[2] यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी (तंबीह) है कि पहले की क़ौमों ने पैग़म्बरों को झुठलाया तो उनकी यह बुरी हालत हुई और तुम सब से अच्छे रसूल तथा सब से अच्छे इंसान को झुठला रहे हो तो तुम्हें भी इस झुठलाने के बुरे नतीजे से डरना चाहिए।

[3] यानी पाक क़ुरआन साफ़ अरबी भाषा में है, जिस में कोई टेढ़ापन, विमुखता (इश्काल) और भ्रम नहीं ताकि लोग उस में बयान की गई चेतावनियों (वईदों) से डरें और उस में बयान किये वादों के पात्र (मुस्तहक़) बनने के लिए अमल करें।

२९. अल्लाह (तआला) मिसाल बयान कर रहा है कि एक वह इंसान जिस में बहुत से आपस में भिन्नता (इख़्तिलाफ़) रखने वाले साझीदार हैं और दूसरा वह इंसान जो सिर्फ़ एक ही का (दास) है, क्या ये दोनों सिफ़त (गुणों) में एक बराबर हैं।[1] सारी तारीफ़े अल्लाह (तआला) के लिए हैं। बात यह है कि उन में से ज़्यादातर लोग जाहिल हैं।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۗ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (29)

३०. बेशक ख़ुद आप को भी मौत आयेगी और ये सब भी मरने वाले हैं।

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ (30)

३१. फिर तुम सब के सब क़यामत के दिन अपने रब के सामने झगड़ोगे।[2]

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ (31)

---

[1] इस में मुशरिक (अल्लाह का साझी बनाने वाले) और मुख़लिस (सिर्फ़ अल्लाह के लिए इबादत करने वाले) की मिसाल दी गई है, यानी एक ग़ुलाम है जो कई इंसानों के साझे का है जो आपस में झगड़ते रहते हैं और एक दूसरा ग़ुलाम है जिसका मालिक केवल एक ही इंसान है और उसकी मिल्कियत में उसका कोई साझी नहीं, क्या यह दोनों ग़ुलाम बराबर हो सकते हैं? नहीं, बेशक नहीं। इसी तरह वह मुशरिक जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूदों की भी इबादत करता है और वह ख़ालिस ईमान वाला जो केवल एक अल्लाह की इबादत करता है और उस के साथ किसी को साझी नहीं बनाता, बराबर नहीं हो सकते।

[2] यानी हे पैग़म्बर, आप भी और आप के विरोधी (मुख़ालिफ़) भी मरकर इस दुनिया से हमारे पास आख़िरत (परलोक) में आयेंगे। दुनिया में तो एकेश्वरवाद (तौहीद) और मिश्रणवाद (शिर्क) का फ़ैसला तुम्हारे बीच नहीं हो सका और तुम इसके बारे में झगड़ते ही रहे, लेकिन यहाँ मैं इसका फ़ैसला कर दूँगा और ख़ालिस तौहीद वालों को जन्नत में और नकारने वाले झूठे मुश्रिकों को नरक में दाख़िल कराउंगा, इस आयत से भी नबी ﷺ की मौत का सुबूत मिलता है, जिस तरह सूर: आले-इमरान की आयत १४४ से भी मिलता है और इन्हीं आयतों से मतलब निकालकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने आप (ﷺ) की मौत को साबित किया था। इसलिए नबी ﷺ के बारे में यह अक़ीदा रखना कि आप को बरज़ख़ (मौत के बाद से क़यामत तक के बीच की मुद्दत) में उसी तरह ज़िन्दगी मिली है जिस तरह दुनिया में मिली थी, पाक क़ुरआन के विपरीत (मुख़ालिफ़) है। आप को भी दूसरे इंसानों जैसे मौत हुई, इसलिए आप को गाड़ दिया गया, क़ब्र में आप को बर्ज़ख़ी (मध्य) की ज़िन्दगी तो ज़रूर मिली है जिसकी हालत का हमें ज्ञान (इल्म) नहीं, लेकिन क़ब्र में आप को दोबारा दुनियावी ज़िन्दगी नहीं दी गई।